वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला का पुष्प नं. 74
ISBN 978-93-80353-16-6

जिनगुण संपत्ति विधान

–रचयित्री–

तीर्थंकर जन्मभूमियों एवं प्राचीन तीर्थों के विकास की प्रेरणास्रोत

गणिनीप्रमुख आर्यिका श्री ज्ञानमती माताजी

परमपूज्य राष्ट्रगौरव, युगप्रवर्तिका, चारित्रचन्द्रिका, गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी के 60वें त्यागदिवस एवं 78वें जन्मदिवस–शरदपूर्णिमा महोत्सव-2011 के शुभ अवसर पर प्रकाशित

-प्रकाशक-

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान

जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.-250404,

फोन नं.- (01233) 280184, 280994

Website : www.jambudweep.org, E-mail : rk195057@yahoo.com

COURTESY–JAIN BOOK DEPOT
C/o Shri Nabhi Kumar Manav Kumar Jain
C-4, Opp. PVR Plaza, Cannaught Place, New Delhi-1
Ph.-011-23416101-02-03/Website : www.jainbookdepot.com

सप्तम संस्करण	वीर नि. सं. 2537	मूल्य
2200 प्रतियाँ	आश्विन शुक्ला 15, शरदपूर्णिमा	20/-रु.

11 अक्टूबर 2011

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान द्वारा संचालित

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला

इस ग्रन्थमाला में दिगम्बर जैन आर्षमार्ग का पोषण करने वाले हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत, कन्नड़, अंग्रेजी, गुजराती, मराठी आदि भाषाओं के न्याय, सिद्धान्त, अध्यात्म, भूगोल-खगोल, व्याकरण आदि विषयों पर लघु एवं वृहद् ग्रंथों का मूल एवं अनुवाद सहित प्रकाशन होता है। समय-समय पर धार्मिक लोकोपयोगी लघु पुस्तिकाएं भी प्रकाशित होती रहती हैं।

–: संस्थापिका एवं प्रेरणास्रोत :–

परमपूज्य गणिनीप्रमुख आर्यिकाशिरोमणि श्री ज्ञानमती माताजी

–: मार्गदर्शन :–

प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका श्री चन्दनामती माताजी

–: निर्देशन :–

धर्मदिवाकर पीठाधीश क्षुल्लकरत्न श्री मोतीसागर जी महाराज

–: सम्पादक :–

कर्मयोगी ब्र. रवीन्द्र कुमार जैन

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

प्रथम संस्करण-सन् 1985, प्रतियाँ-2200,.....चतुर्थ-सन् 2006, प्रतियाँ-2200,
इस प्रकार अभी तक इस विधान की लगभग 8800 प्रतियाँ प्रकाशित हो चुकी हैं।
पंचम संस्करण-सन् 2008, प्रतियाँ-2200, षष्ठ संस्करण-सन् 2009, प्रतियाँ-2200

कम्पोजिंग–ज्ञानमती नेटवर्क
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.

सम्पादकीय

–कर्मयोगी ब्र.रवीन्द्र कुमार जैन

साहित्य समाज का दर्पण होता है उसी के द्वारा देश, समाज एवं प्राचीन तीर्थों के वैभव का ज्ञान होता है। जब इस धरती पर मनुष्यों की बुद्धि अति तीक्ष्ण थी, एक बार सुनने मात्र से उन्हें जो ज्ञान प्राप्त हो जाता था उसे वे कभी भूलते नहीं थे तब साहित्य लेखन की परम्परा नहीं थी किन्तु जब हमारे ऋषि-मुनियों ने देखा कि अब मानव-स्मृति क्षीण हो रही है तब केवल ज्ञानियों की वाणी को शास्त्रों में संजोना-लिखना प्रारंभ किया गया।

लेखन परम्परा में सबसे पहले आचार्य गुणधरस्वामी ने कषायप्राभृत ग्रंथ एवं पुष्पदंत-भूतबलि आचार्यों ने षट्खण्डागम ग्रंथ रचा उसके पश्चात् तो आचार्य यतिवृषभ, कुन्दकुन्ददेव, अकलंकदेव, पूज्यपाद, समंतभद्र आदि अनेक आचार्यों ने अनेक बहुमूल्य ग्रंथ लिखे जो कि मंदिरों में, शास्त्र भण्डारों में आज भी प्राप्त होते हैं।

वर्तमान में बीसवीं शताब्दी की प्रथम बालब्रह्मचारिणी आर्यिका पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी ने साहित्य सृजन के इतिहास में एक अपूर्व कीर्तिमान स्थापित किया है। पूज्य माताजी बीसवीं सदी के प्रथम आचार्य चारित्रचक्रवर्ती श्री शांतिसागर जी महाराज के प्रथम पट्टशिष्य आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज की शिष्या हैं जिन्होंने उन्हें 'ज्ञानमती' नाम से अलंकृत कर जैन समाज को आर्यिका रूप में एक अनमोल निधि प्रदान की है।

पूज्य माताजी द्वारा रचित इन्द्रध्वज, कल्पद्रुम, सर्वतोभद्र, सिद्धचक्र, तीन लोक आदि बड़े-बड़े विधानों से देशभर का सम्पूर्ण जैन समाज सुपरिचित है। पूज्य माताजी ने छोटे-बड़े अनेक विधानों की रचना की है, जिसमें आपके समक्ष ''जिनगुणसंपत्ति विधान'' भी एक है। इसमें भगवान के 63 गुणों की अर्चना की गई है। जिसका महात्म्य कौन कह सकता है? यह विधान आप सभी के मनोरथों को पूर्ण करें, यही मंगलकामना है।

प्रस्तावना

–जीवन प्रकाश जैन (एम.एस.सी.),
जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर

वर्तमान समय में पूजा-विधान का नाम लेते ही पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की झलक सामने दिखाई देने लगती है। साहित्य सृजन के क्षेत्र में ऐतिहासिक क्रांति लाने वाली पूज्य माताजी की लेखनी से अनेकानेक भावपूर्ण छोटे-बड़े पूजा-विधान प्रसूत हुए हैं। इन्द्रध्वज, कल्पद्रुम, सर्वतोभद्र, तीनलोक आदि अनेक बड़े विधानों की रचना के साथ ऋषिमण्डल, पंचपरमेष्ठी, श्रुतस्कंध, तीस चौबीसी, विषापहार आदि विधान जिनेन्द्र भक्ति के अपूर्व माध्यम के रूप में आज हमें प्राप्त हैं। इसी प्रकार आचार्य श्री शांतिसागर विधान एवं आचार्य श्री वीरसागर विधान के माध्यम से जिनभक्ति के साथ भक्तों को गुरुभक्ति करने का भी स्वर्णिम अवसर प्राप्त होता है।

विधानों की ही श्रृँखला में पूज्य माताजी द्वारा रचित यह जिनगुणसंपद् विधान सप्तवलय पूजाओं में विभक्त है। इसमें जिनेन्द्र भगवान के 63 गुणों की भक्ति-आराधना की गई है। प्रथम वलय में जिनेन्द्रप्रभु की सोलहकारण भावनाओं के मंत्रपूर्वक अर्घ्य हैं। इसी प्रकार द्वितीय वलय में भगवान के पाँच कल्याणक, तृतीय वलय में अष्ट प्रातिहार्य, चतुर्थ वलय में जन्म के 10 अतिशय, पंचम वलय में केवलज्ञान के 10 अतिशय एवं षष्ठ वलय में देवकृत 14 अतिशयों के अर्घ्य हैं। इस तरह भगवान के महावैभवशाली इन 63 गुणों की अर्चा करके भक्तजन मनोवांछित फल की प्राप्ति करते हैं। इस विधान के करने से मानसिक शांति और आत्मविशुद्धि के साथ स्वात्म गुणों में भी वृद्धि होती है। प्रस्तुत विधान में सर्वप्रथम नवदेवता पूजन पश्चात् समुच्चय पूजा के साथ जिनगुणसम्पत विधान प्रारंभ किया गया है। अंत में जिगुणसंपद् व्रतविधि, कथा एवं मंत्रों को भी दिया गया है।

यह विधान भगवान के वैभव की अर्चा करने का बिल्कुल अनूठा माध्यम है। जो आठ द्रव्य प्रत्येक प्राणी को संसार में परिभ्रमण कराने में कारण हैं, उन्हीं द्रव्यों को भगवान के गुणों के प्रति भक्ति करते हुए समर्पित करने से अतिशयी पुण्य का उपार्जन होता है। इस विधान को करने वाले भक्तजन अवर्णनीय अंतरंग आनंद का अनुभव करते हैं। गणिनी श्री ज्ञानमती माताजी यही कहती हैं कि इस कलिकाल में अपनी आत्मा की विशुद्धि हेतु अंतरंग ध्यान साधना से अधिक उपयोगी पूजा-विधान के माध्यम से भगवान की भक्ति करना है। क्योंकि कालदोष के कारण ध्यान साधना में कोई भी जीव उत्कृष्ट अवस्था को प्राप्त करने में असमर्थ होता है। अतः इस विधान को करके आप अपने समस्त मनोरथों की सिद्धि करते हुए अपनी आत्मा के वैभव को पहचानें, यही भावना है।

प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव जीवन दर्शन

–पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर

आज से करोड़ों वर्ष पूर्व प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव का जन्म भारतवर्ष के उत्तरप्रदेश की अयोध्यानगरी के महाराजा नाभिराय की महारानी मरुदेवी की पवित्र कुक्षि से चैत्र कृष्णा नवमी को हुआ। क्षत्रियवर्णी, काश्यपगोत्रीय, इक्ष्वाकुवंशी, तप्त स्वर्ण सदृश, बैल चिन्ह से युक्त उन तीर्थंकर भगवान की शरीर की अवगाहना दो हजार हाथ एवं आयु चौरासी लाख पूर्व वर्ष की थी। भगवान ऋषभदेव ने कर्मभूमि की आदि में प्रजा कोअसि, मसि आदि षट्क्रियाओं द्वारा जीवन जीने की कला सिखाई थी। सम्पूर्ण विद्याओं और कलाओं के जनक भगवान ऋषभदेव ने चैत्र कृष्णा नवमी की शुभ तिथि में प्रयाग में वटवृक्ष के नीचे जैनेश्वरी दीक्षा ग्रहण कर घोर तपश्चरण किया पुनः मुनि परम्परा को जीवन्त करने हेतु आहारार्थ निकले। 1 वर्ष 39 दिन के पश्चात् उनका प्रथम आहार हस्तिनापुर के राजा श्रेयांसके यहाँ इक्षुरस का हुआ। प्रयाग के पुरिमतालपुर उद्यान में वटवृक्ष के नीचे फाल्गुन कृष्णा ग्यारस को उन्हें दिव्यकेवलज्ञान की प्राप्ति हुई, उनके समवसरण में श्री वृषभसेन आदि 84 गणधर, 84 हजार मुनि, गणिनी ब्राह्मी आर्यिका सहित 350000 आर्यिकाएं, 3 लाख श्रावक,5 लाख श्राविकाएँ थे। उनके जिनशासन यक्ष गोमुख देव एवं यक्षी चक्रेश्वरी देवी हैं। आयुके अंत में उन्होंने माघ कृष्णा चौदस को कैलाशपर्वत से मोक्ष प्राप्त किया।

चौबीसवें तीर्थंकर भगवान महावीर का जीवन दर्शन

वर्तमान से 2605 वर्ष पूर्व चौबीसवें एवं अंतिम तीर्थंकर भगवान महावीर का जन्म भारतवर्ष के बिहार प्रांत में जिला नालंदा की कुण्डलपुर नगरी में महाराजा सिद्धार्थ की महारानी त्रिशला की पवित्र कुक्षि से चैत्र शुक्ला त्रयोदशी की पवित्र तिथिमें हुआ। क्षत्रियवर्णी, काश्यपगोत्रीय, नाथवंशी, तप्त स्वर्ण सदृश, सिंह चिन्ह से युक्त उन तीर्थंकर भगवान के शरीर की अवगाहना सात हाथ एवं आयु 72 वर्ष की थी। 30 वर्ष की उम्र में अखण्ड ब्रह्मचर्यव्रत का पालन करने वाले भगवान महावीर ने षण्डवन में सालवृक्ष के नीचे मगशिर कृष्णा दशमी तिथि में दीक्षा ग्रहण की। उनका प्रथम आहार कूल ग्राम के राजा वकुल के द्वारा खीर का हुआ तथा विशेष आहार कौशाम्बी में महासती चंदना द्वारा खीर का हुआ। भगवान महावीर को दिव्य केवलज्ञान की प्राप्ति ज्ञातृषण्डवन में वैशाख शुक्ल दशमी को ऋजुकूला नदी के तट पर हुई, उनके समवसरण में श्री इन्द्रभूति आदि 11 गणधर, 14 हजार मुनि, गणिनी आर्यिका चन्दना सहित छत्तीस हजार आर्यिकाएँ, 1 लाख श्रावक व 3 लाख श्रविकाएं थीं। उनकी दिव्यध्वनि श्रावण कृष्णा एकम को खिरी और कार्तिक कृष्णा अमावस्या को बिहार प्रान्त स्थित पावापुरी से मोक्ष पद प्राप्त किया।

भगवान महावीर के वीर, वर्द्धमान, महावीर, सन्मति, अतिवीर ये पाँच नाम प्रसिद्ध हैं।

विधान की रचयित्री राष्ट्रगौरव, गणिनीप्रमुख, आर्यिकाशिरोमणि

श्री ज्ञानमती माताजी का संक्षिप्त-परिचय

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चन्दनामती

जन्मस्थान–टिकैतनगर (बाराबंकी) उ.प्र.

जन्मतिथि–आसोज सुदी 15 (शरदपूर्णिमा) वि. सं. 1991, (22 अक्टूबर सन् 1934)

जाति–अग्रवाल दि. जैन, **गोत्र**–गोयल, **नाम**–कु. मैना

माता-पिता–श्रीमती मोहिनी देवी एवं श्री छोटेलाल जैन

आजन्म ब्रह्मचर्य व्रत–ई. सन् 1952 में बाराबंकी में शरदपूर्णिमा के दिन

क्षुल्लिका दीक्षा–चैत्र कृ. 1, ई. सन् 1953 को महावीरजी अतिशय क्षेत्र (राज.) में आचार्यरत्न श्री देशभूषण जी महाराज से। नाम– क्षुल्लिका वीरमती

आर्यिका दीक्षा–वैशाख कृ. 2, ई. सन् 1956 को माधोराजपुरा (राज.) में चारित्रचक्रवर्ती 108 आचार्य श्री शांतिसागर जी की परम्परा के प्रथम पट्टाधीश आचार्य श्री वीरसागर जी महाराज के करकमलों से।

साहित्यिक कृतित्व–अष्टसहस्री, समयसार, नियमसार, मूलाचार, कातंत्र-व्याकरण, षट्खण्डागम आदि ग्रंथों के अनुवाद/टीकाएं एवं 250 विशिष्ट ग्रंथों की लेखिका।सन् 1995 में अवध वि.वि. (फैजाबाद) द्वारा "डी.लिट्." की मानद उपाधि से विभूषित।

तीर्थ निर्माण प्रेरणा–हस्तिनापुर में जंबूद्वीप तेरहद्वीप, तीनलोक आदि रचनाओं के निर्माण, शाश्वत तीर्थ अयोध्या का विकास एवं जीर्णोद्धार, प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का निर्माण, तीर्थंकर जन्मभूमियों का विकास यथा- भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार) में 'नंद्यावर्त महल' नामक तीर्थ निर्माण, भगवान पुष्पदंतनाथ की जन्मभूमि काकन्दी तीर्थ (निकट गोरखपुर-उ.प्र.) का विकास, भगवान पार्श्वनाथ केवलज्ञानभूमि अहिच्छत्र तीर्थ पर तीस चौबीसी मंदिर, हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप स्थल पर भगवान शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग खड्गासन प्रतिमा, मांगीतुंगी में निर्माणाधीन 108 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की विशाल प्रतिमा इत्यादि।

महोत्सव प्रेरणा–पंचवर्षीय जम्बूद्वीप महामहोत्सव, भगवान ऋषभदेव अंतर्राष्ट्रीय निर्वाण महामहोत्सव, अयोध्या में भगवान ऋषभदेव महाकुंभ मस्तकाभिषेक, कुण्डलपुर महोत्सव, भगवान पार्श्वनाथ जन्मकल्याणक तृतीय सहस्राब्दि महोत्सव, दिल्ली में कल्पद्रुम महामण्डल विधान का ऐतिहासिक आयोजन इत्यादि। **विशेषरूप से 21 दिसम्बर 2008 को जम्बूद्वीप स्थल पर विश्वशांति अहिंसा सम्मेलन का आयोजन हुआ, जिसका उद्घाटन भारत की राष्ट्रपति श्रीमतीप्रतिभा देवीसिंह पाटील द्वारा किया गया।**

शैक्षणिक प्रेरणा–'जैन गणित और त्रिलोक विज्ञान' पर अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी, राष्ट्रीय कुलपति सम्मेलन, इतिहासकार सम्मेलन, न्यायाधीश सम्मेलन एवं अन्य अनेक राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सेमिनार आदि।

रथ प्रवर्तन प्रेरणा–जम्बूद्वीप ज्ञानज्योति (1982 से 1985), समवसरण श्रीविहार (1998 से 2002), महावीर ज्योति (2003-2004) का भारत भ्रमण।

इस प्रकार नित्य नूतन भावनाओं की जननी पूज्य माताजी चिरकाल तक इस वसुधा को सुशोभित करती रहें, यही मंगल कामना है।

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान-संक्षिप्त परिचय

–पीठाधीश क्षुल्लक मोतीसागर

दिगम्बर जैन त्रिलोक शोध संस्थान की स्थापना पूज्य गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की प्रेरणा से सन् 1972 में राजधानी दिल्ली में हुई थी। संस्थान का मुख्य कार्यालय सन् 1974 से हस्तिनापुर में प्रारंभ हुआ। इस संस्थान के अन्तर्गत अनेक गतिविधियाँ हस्तिनापुर में तथा अन्यत्र चल रही हैं–

1. सन् 1972 से वीर ज्ञानोदय ग्रंथमाला के अन्तर्गत लाखों ग्रंथ प्रकाशित हो रहे हैं।

2. सन् 1974 से इस संस्थान के मुखपत्र के रूप में 'सम्यग्ज्ञान' हिन्दी मासिक पत्रिका का निरंतर प्रकाशन हो रहा है।

3. सन् 1974 से 1985 तक हस्तिनापुर में जम्बूद्वीप रचना का निर्माण कार्य हुआ।

4. सन् 1974 से अब तक जम्बूद्वीप रचना के अतिरिक्त अनेक जिनमंदिरों का निर्माण हुआ है–कमल मंदिर, तीन मूर्ति मंदिर, ध्यान मंदिर, शांतिनाथ मंदिर, वासुपूज्य मंदिर, ॐ मंदिर, सहस्रकूट मंदिर, विद्यमान बीस तीर्थंकर मंदिर, आदिनाथ मंदिर, अष्टापद मंदिर, ऋषभदेव कीर्तिस्तंभ, स्वर्णिम तेरहद्वीप रचना, नवग्रहशांति जिनमंदिर, तीन लेक रचना एवं श्री शांतिनाथ-कुंथुनाथ-अरहनाथ की 31-31 फुट उत्तुंग प्रतिमाओं की स्थापना ।

5. जम्बूद्वीप पुस्तकालय जिसमें लगभग 15000 ग्रंथ संग्रहीत हैं।

6. णमोकार महामंत्र बैंक जिसमें भक्तों द्वारा लिखकर भेजे गये करोड़ों णमोकार मंत्र जमा किये जाते हैं।

7. समय-समय पर शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों तथा संगोष्ठियों के आयोजन कियेजाते हैं।

8. यात्रियों के शुद्ध भोजन के लिए राजा श्रेयांस भोजनालय का संचालन।

9. यात्रियों के ठहरने के लिए आधुनिक सुविधायुक्त डीलक्स फ्लैट्स वाली कई धर्मशालाओं तथा कोठियों एवं बंगलों का निर्माण किया गया है।

10. जम्बूद्वीप परिक्रमा के लिए नौका विहार, ऐरावत हाथी तथा मनोरंजन हेतु मिनी ट्रेन, झूले आदि हैं।

11. ज्ञानमती कला मंदिरम् में हस्तिनापुर के प्राचीन इतिहास से संबंधित झाँकियाँ हैं।

12. तीर्थंकर जन्मभूमियों की वंदना एवं धार्मिक फिल्मों का प्रदर्शन करने वाले थियेटर से समन्वित गणिनी ज्ञानमती हीरक जयंती एक्सप्रेस।

दिल्ली, मेरठ, मुजफ्फरनगर, हरिद्वार, झाँसी, तिजारा आदि से जम्बूद्वीप स्थल तक आने के लिए दिन भर बसें मिलती रहती हैं।

दि. जैन त्रिलोक शोध संस्थान के अन्तर्गत भगवान महावीर जन्मभूमि कुण्डलपुर (नालंदा) बिहार में भव्य ''नंद्यावर्त महल'' तथा प्रयाग-इलाहाबाद (उ.प्र.) में निर्मित तीर्थंकर ऋषभदेव तपस्थली तीर्थ का भी संचालन होता है।

जम्बूद्वीप एवं अन्य रचनाओं के दर्शन हेतु हस्तिनापुर पधारकर आध्यात्मिक एवं भौतिक सुख की प्राप्ति करें।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के शिरोमणि संरक्षक

1. श्रीमती निर्मला जैन ध.प. स्व. श्री प्रेमचन्द्र जैन, तत्पुत्र प्रदीप कुमार जैन, खी बावली, दिल्ली-6।
2. श्रीमती सुमन जैन ध.प. श्री दिग्विजय सिंह जैन, इंदौर।
3. श्री महावीर प्रसाद जैन संघपति, जी-19, साऊथ एक्सटेन्शन, नई दिल्ली।
4. श्री महेन्द्र पाल हरेन्द्र कुमार जैन, सूरजमल विहार, दिल्ली।
5. श्रीमती मोहनी जैन ध.प. श्री सुनील जैन, प्रीत विहार, दिल्ली।
6. श्री देवेन्द्र कुमार जैन (धारूहेड़ा वाले) गुड़गाँव (हरि.)।
7. श्रीमती शारदा रानी जैन ध.प. स्व. रिखबचंद जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।
8. डॉ. देवेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
9. श्रीमती संगीता जैन ध.प. श्री संजीव कुमार जैन, शेरकोट (बिजनौर) उ.प्र.
10. श्री अनिल कुमार जैन, दरियागंज, दिल्ली
11. श्री बी.डी. मदनाइक, मुम्बई
12. श्री धनकुमार जैन, बाहुबली एन्क्लेव, दिल्ली-92।
13. श्री जितेन्द्र कुमार जैन एवं श्रीमती सुनीता जैन कोटड़िया, फ्लोरिडा, यू.एस.ए.
14. श्रीमती विमला देवी जैन ध.प. श्री ओमप्रकाश जैन, स्वालिक नगर, हरिद्वार (उत्तराखंड)।
15. श्री अमित जैन एवं संभव जैन सुपुत्र श्रीमती अनीता जैन ध.प. श्री मूलचंद जैन पाटनी, दिसपुर (कामरूप) आसाम।
16. श्रीमती अजित कुमारी जैन ध.प. श्री महेन्द्र कुमार जैन, ओबेदुल्लागंज (रायसेन) म.प्र.।
17. श्री नाभिकुमार जैन, जैन बुक डिपो, सी-4, पी.वी.आर. प्लाजा के पीछे, कॉट प्लेस, नई दिल्ली।

वीर ज्ञानोदय ग्रन्थमाला के परम संरक्षक

1. श्री माँगीलाल बाबूलाल पहाड़े, हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश)।
2. डॉ. प्रकाशचन्द्र जैन, 792 विवेकानंदपुरी, सिविल लाइन, सीतापुर (उ.प्र.)।
3. श्री सुमत प्रकाश जैन, गज्जू कटरा, शाहदरा, दिल्ली।
4. श्री सुनील कुमार जैन, द्वारा-सुनील टैक्सटाईल्स, सरधना (मेरठ) उ.प्र.।
5. स्व. श्री प्रकाश चंद अमोलक चंद जैन सर्राफ, सनावद (म.प्र.)।
6. श्री प्रद्युम्न कुमार जवेरी, रोकड़ियालेन, बोरीवली (वेस्ट) मुंबई।
7. श्रीमती उर्मिला देवी ध.प. श्री कान्ती प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
8. श्रीमती उषा जैन ध.प. श्री विमल प्रसाद जैन, ऋषभ विहार, दिल्ली।
9. श्री आनन्द प्रकाश जैन (सौरम वाले) , गांधीनगर, दिल्ली।
10. श्रीमती सरिता जैन ध.प. श्री राजकुमार जैन, किदवई नगर, कानपुर।
11. स्व. श्रीमती कैलाशवती ध.प. श्री कैलाश चन्द्र जैन , तोपखाना बाजार, मेरठ।
12. श्री भानेन्द्र कुमार जैन, द्वारा-श्री विद्या जैन, भगत सिंह मार्ग, जयपुर।
13. श्री प्रदीप कुमार शान्तिलाल बिलाला, अनूपनगर, इंदौर, (म.प्र.)।
14. श्री सुरेशचंद पवन कुमार जैन, बाराबंकी (उ.प्र.)।
15. श्री नथमल पारसमल जैन, कलकत्ता-7।
16. श्रीमती स्व. शांताबाई ध.प. श्री कमलचंद जैन, सनावद (म.प्र.)।
17. श्री रूपचंद जैन कटारिया, दिल्ली
18. श्री आशु जैन, कालका जी, नई दिल्ली

चौबीस तीर्थंकरों की सोलह जन्मभूमियों की नामावली

महानुभावों,

अपने नगर के जिनमंदिरों में चौबीस तीर्थंकरों की सोलह जन्मभूमियों के नाम निम्नानुसार लिखवाएं एवं इन तीर्थों की यात्रा करके पुण्यलाभ प्राप्त करें।

1. अयोध्या (फैजाबाद-उ.प्र.)	– श्री ऋषभदेव भगवान
	श्री अजितनाथ भगवान
	श्री अभिनंदननाथ भगवान
	श्री सुमतिनाथ भगवान
	श्री अनंतनाथ भगवान
2. श्रावस्ती (बहराइच-उ.प्र.)	– श्री संभवनाथ भगवान
3. कौशाम्बी (उ.प्र.)	– श्री पद्मप्रभु भगवान
4. वाराणसी (उ.प्र.)	– श्री सुपार्श्वनाथ भगवान
	श्री पार्श्वनाथ भगवान
5. चन्द्रपुरी (वाराणसी) उ.प्र.	– श्री चन्द्रप्रभु भगवान
6. काकन्दी (देवरिया नि.-गोरखपुर) उ.प्र.	– श्री पुष्पदंतनाथ भगवान
7. भद्रिकापुरी, इटखोरी (चतरा-झारखंड)	– श्री शीतलनाथ भगवान
8. सिंहपुरी (सारनाथ) उ.प्र.	– श्री श्रेयांसनाथ भगवान
9. चम्पापुरी (भागलपुर-बिहार)	– श्री वासुपूज्यनाथ भगवान
10. कम्पिलपुरी (फर्रूक्खाबाद-उ.प्र.)	– श्री विमलनाथ भगवान
11. रत्नपुरी (फैजाबाद-उ.प्र.)	– श्री धर्मनाथ भगवान
12. हस्तिनापुर (मेरठ-उ.प्र.)	– श्री शांतिनाथ भगवान
	श्री कुन्थुनाथ भगवान
	श्री अरनाथ भगवान
13. मिथिलापुरी	– श्री मल्लिनाथ भगवान
	श्री नमिनाथ भगवान
14. राजगृही (नालंदा-बिहार)	– श्री मुनिसुव्रतनाथ भगवान
15. शौरीपुर (बटेश्वर-उ.प्र.)	– श्री नेमिनाथ भगवान
16. कुण्डलपुर (नालंदा-बिहार)	– श्री महावीर भगवान

–निवेदक –

अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन तीर्थंकर जन्मभूमि विकास कमेटी

प्रधान कार्यालय –**जम्बूद्वीप-हस्तिनापुर (मेरठ) उ.प्र.**, फोन नं.-01233-280184, 292943

जिनगुणसंपत्ति विधान का मंडल

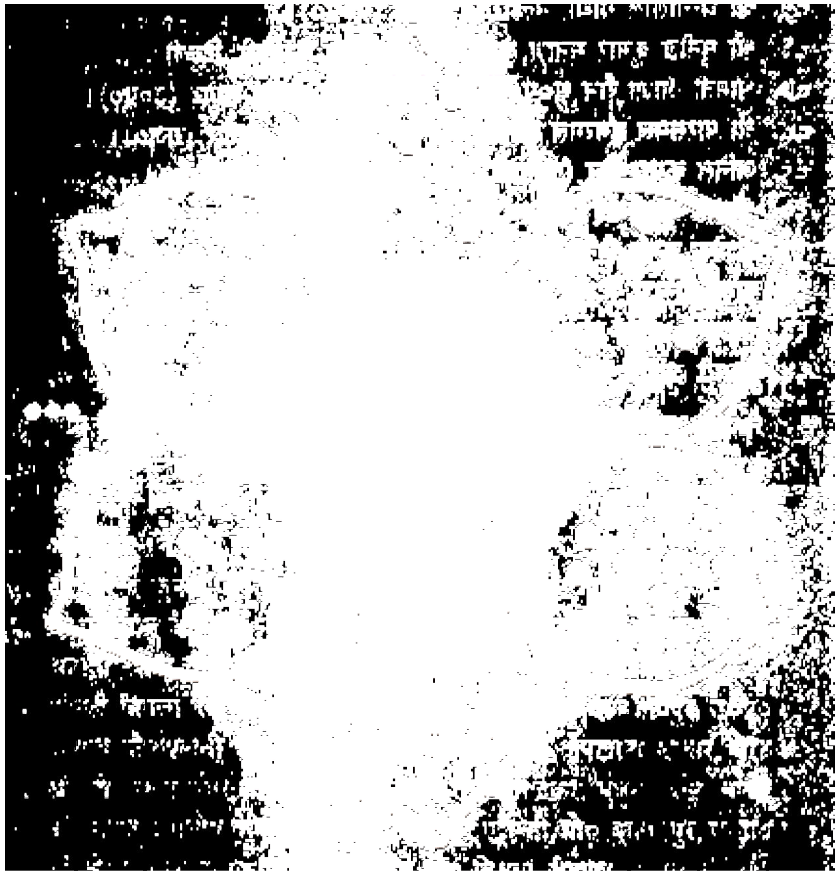

नवदेवता पूजन

–गणिनी आर्यिका ज्ञानमती

–गीता छन्द –

अरिहंत सिद्धाचार्य पाठक, साधु त्रिभुवन वंद्य हैं।
जिनधर्म जिनआगम जिनेश्वर, मूर्ति जिनगृह वंद्य हैं।।
नव देवता ये मान्य जग में, हम सदा अर्चा करें।
आह्वान कर थापें यहाँ, मन में अतुल श्रद्धा धरें।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधु जिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव-भव वषट् सन्निधीकरणं।

–अथाष्टक –

गंगानदी का नीर निर्मल, बाह्य मल धोवे सदा।
अंतर मलों के क्षालने को, नीर से पूजूँ मुदा।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल पाय शिवकांता वरें।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर मिश्रित गंध चंदन, देह ताप निवारता।
तुम पाद पंकज पूजते, मन ताप तुरतहिं वारता।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल पाय शिवकांता वरें।।2।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षीरोदधी के फेन सम सित, तंदुलों को लायके।
उत्तम अखंडित सौख्य हेतु, पुंज नवसु चढ़ायके।।

नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।3।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चम्पा चमेली केवड़ा, नाना सुगन्धित ले लिये।
भव के विजेता आपको, पूजत सुमन अर्पण किये।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।4।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पायस मधुर पकवान मोदक, आदि को भर थाल में।
निज आत्म अमृत सौख्य हेतू, पूजहूँ नत भाल मैं।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्पूर ज्योति जगमगे, दीपक लिया निज हाथ में।
तुम आरती तम वारती, पाऊँ सुज्ञान प्रकाश मैं।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।6।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशगंधधूप अनूप सुरभित, अग्नि में खेऊँ सदा।
निज आत्मगुण सौरभ उठे, हों कर्म सब मुझसे विदा।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।7।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर अमरख आम्र अमृत, फल भराऊँ थाल में।
उत्तम अनूपम मोक्ष फल के, हेतु पूजूँ आज मैं।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध अक्षत पुष्प चरु, दीपक सुधूप फलार्घ्य ले।
वर रत्नत्रय निधि लाभ यह, बस अर्घ्य से पूजत मिले।।
नवदेवताओं की सदा जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नवनिधि रिद्धि मंगल, पाय शिवकांता वरें।।9।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिन-चैत्यचैत्यालयेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा – **जलधारा से नित्य मैं, जग की शांति हेत।**
नवदेवों को पूजहूँ, श्रद्धा भक्ति समेत।।10।।

शांतये शांतिधारा।

नानाविध के सुमन ले, मन में बहु हरषाय।
मैं पूजूँ नव देवता, पुष्पांजली चढ़ाय।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

***जाप्य –*ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागम जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो नमः।**

जयमाला

सोरठा – **चिच्चिंतामणिरत्न, तीन लोक में श्रेष्ठ हो।**
गाऊँ गुणमणिमाल, जयवंते वर्तो सदा।।1।।

(चाल-हे दीनबन्धु श्रीपति.....)

जय जय श्री अरिहंत देवदेव हमारे।
जय घातिया को घात सकल जंतु उबारे।।
जय जय प्रसिद्ध सिद्ध की मैं वंदना करूँ।
जय अष्ट कर्ममुक्त की मैं अर्चना करूँ।।2।।

आचार्य देव गुण छत्तीस धार रहे हैं।
दीक्षादि दे असंख्य भव्य तार रहे हैं।।
जैवंत उपाध्याय गुरु ज्ञान के धनी।
सन्मार्ग के उपदेश की वर्षा करें घनी।।3।।
जय साधु अठाईस गुणों को धरें सदा।
निज आत्मा की साधना से च्युत न हों कदा।।
ये पंचपरमदेव सदा वंद्य हमारे।
संसार विषम सिंधु से हमको भी उबारें।।4।।
जिनधर्म चक्र सर्वदा चलता ही रहेगा।
जो इसकी शरण ले वो सुलझता ही रहेगा।।
जिन की ध्वनि पीयूष का जो पान करेंगे।
भव रोग दूर कर वे मुक्ति कांत बनेंगे।।5।।
जिन चैत्य की जो वंदना त्रिकाल करे हैं।
वे चित्स्वरूप नित्य आत्म लाभ करे हैं।।
कृत्रिम व अकृत्रिम जिनालयों को जो भजें।
वे कर्मशत्रु जीत शिवालय में जा बसें।।6।।
नव देवताओं की जो नित आराधना करें।
वे मृत्युराज की भी तो विराधना करें।।
मैं कर्मशत्रु जीतने के हेतु ही जजूँ।
सम्पूर्ण ''ज्ञानमती'' सिद्धि हेतु ही भजूँ।।7।।

दोहा – **नवदेवों को भक्तिवश, कोटि कोटि प्रणाम।**
भक्ती का फल मैं चहूँ, निजपद में विश्राम।।8।।

ॐ ह्रीं अर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुजिनधर्मजिनागमजिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं.....।

शांतिधारा, पुष्पांजलिः।

–गीता छंद –

जो भव्य श्रद्धाभक्ति से, नवदेवता पूजा करें।
वे सब अमंगल दोष हर, सुख शांति में झूला करें।।
नवनिधि अतुल भंडार ले, फिर मोक्ष सुख भी पावते।
सुखसिंधु में हो मग्न फिर, यहाँ पर कभी न आवते।।9।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

जिनगुण सम्पत्ति विधान

समुच्चय-पूजन

– गीता छंद –

जिनगुणमहासंपत्ति के, स्वामी जिनेश्वर को नमूँ।
त्रिभुवनगुरू श्रीसिद्ध को, वन्दन करत भवविष वमूँ।।
त्रयकाल के तीर्थंकरों की, मैं करूँ आराधना।
निज आत्मगुण सम्पत्ति की, इस विध करूँ मैं साधना।।1।।

जिनगुणअतुल सम्पत्ति का, व्रत जो भविक विधिवत् करें।
व्रत पूर्णकर उद्योत हेतू, नाथ गुण अर्चन करें।।
मंगल महोत्सव वाद्य से, जिन यज्ञ उत्सव विधि करें।
संगीत नर्तन भक्ति वर्धन, पुण्य अर्जन, विधि करें।।2।।

– दोहा –

चौबीसों जिनराज को, नितप्रति करूँ प्रणाम।
व्रतउद्योतन अर्चना, करूँ आज इत ठाम।।3।।

ॐ ह्रीं जिनयज्ञ प्रतिज्ञापनाय दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत्।

– स्थापना (अडिल्लछंद) –

महावीर अतिवीर, महति जिनवीर हैं।
वर्धमान श्री सन्मति, गुण गंभीर हैं।।

गुण मणि भर्ता, तीर्थंकर को नित नमूँ।
जिन गुण संपति अर्चाकर, नहिंभव भ्रमूँ।।

ॐ ह्रीं जिनगुण सम्पत्ति समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं जिनगुण सम्पत्ति समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं जिनगुण सम्पत्ति समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

– अथाष्टक-नरेन्द्रछंद –

भागीरथी नदी के शीतल, जल से झारी भरिये।
श्री जिनवर के पादयुगल में, धारा कर दुःख हरिये।।
जिनगुण सम्पति व्रत उद्योतन, हेतु जजूँ गुण संपद।
परमानंद परमसुख सागर, पाऊँ जिनगुण संपद।।1।।

ॐ ह्रीं सकलजिनगुणसंपदे जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

कंचनद्रवसम[1] कुंकुमचंदन, भवआतप हर लीजे।
श्री जिनवर के पादयुगल में, अर्चन कर सुख लीजे।।
जिनगुण सम्पति व्रत उद्योतन, हेतु जजूँ गुण संपद।
परमानंद परमसुख सागर, पाऊँ जिनगुण संपद।।2।।

ॐ ह्रीं सकलजिनगुणसंपदे संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मुक्ताफलसम उज्ज्वल अक्षत, सुरभित थाल भराऊँ।
श्री जिनवर के सन्मुख सुन्दर, सुखप्रद पुंज रचाऊँ।।
जिनगुण सम्पति व्रत उद्योतन, हेतु जजूँ गुण संपद।
परमानंद परमसुख सागर, पाऊँ जिनगुण संपद।।3।।

ॐ ह्रीं सकलजिनगुणसंपदे अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कमल मालती पारिजात, अरु चंपक पुष्प मंगाऊँ।
भवविजयी जिनवर पदपंकज, पूजत काम नशाऊँ।।
जिनगुण सम्पति व्रत उद्योतन, हेतु जजूँ गुण संपद।
परमानंद परमसुख सागर, पाऊँ जिनगुण संपद।।4।।

ॐ ह्रीं सकलजिनगुणसंपदे कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

1. पिघलाया हुआ सोना।

लड्डू पेड़ा मिष्ट अंदरसा, फेनी गुझिया लाऊँ।
क्षुधा रोगहर सर्व शक्तिधर, सन्मुख चरू चढ़ाऊँ।।
जिनगुण सम्पति व्रत उद्योतन, हेतु जजूँ गुण संपद।
परमानंद परमसुख सागर, पाऊँ जिनगुण संपद।।5।।

ॐ ह्रीं सकलजिनगुणसंपदे क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणिमय दीपक गो घृत से भृत, जगमग ज्योति जले है।
लोकालोक प्रकाशी जिनवर, पूजत मोह टले है।।
जिनगुण सम्पति व्रत उद्योतन, हेतु जजूँ गुण संपद।
परमानंद परमसुख सागर, पाऊँ जिनगुण संपद।।6।।

ॐ ह्रीं सकलजिनगुणसंपदे मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरभित धूप धूपघट में नित, खेवत कर्म जले हैं।
आत्म गुणों की सौरभ दशदिश, फैले अयश टले हैं।।
जिनगुण सम्पति व्रत उद्योतन, हेतु जजूँ गुण संपद।
परमानंद परमसुख सागर, पाऊँ जिनगुण संपद।।7।।

ॐ ह्रीं सकलजिनगुणसंपदे अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

एला केला सेव संतरा, पिस्ता द्राक्ष मंगाऊँ।
अमृतफल के हेतु आपके, सन्मुख आन चढ़ाऊँ।।
जिनगुण सम्पति व्रत उद्योतन, हेतु जजूँ गुण संपद।
परमानंद परमसुख सागर, पाऊँ जिनगुण संपद।।8।।

ॐ ह्रीं सकलजिनगुणसंपदे मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंधाक्षत पुष्प सुनेवज, दीप धूप फल लाऊँ।
रत्नत्रय निधि हेतु आपके, सन्मुख अर्घ्य चढ़ाऊँ।।
जिनगुण सम्पति व्रत उद्योतन, हेतु जजूँ गुण संपद।
परमानंद परमसुख सागर, पाऊँ जिनगुण संपद।।9।।

ॐ ह्रीं सकलजिनगुणसंपदे अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

सकल जगत में शांतिकर, शांति धार सुखकार।
जिनपद में धारा करूँ, सकल संघ हितकार।।10।।

शांतये शांतिधारा।

सुरतरु के सुरभित सुमन, सुमनस चित्त हरंत।
पुष्पांजलि अर्पण करत, मिटता दुःख तुरंत।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

ॐ ह्रीं सकलजिनगुणसंपद्भ्यो नमः। (108 या 9 बार जाप)

जयमाला

–दोहा–

चिन्मयज्योतिस्वरूप जिन, परमानंद निधान।
तिन गुण मणिमाला कहूँ, निजसुखसुधासमान।।1।।

–स्रग्विणीछंद–

जै तुम्हारे गुणों को सदा गावना।
फेर संसार में ना कभी आवना।।
जै गुणाधार गुण रत्न भंडार हो।
जै महापंच[1] संसार से पार हो।।1।।

श्रेष्ठ दर्शनविशुद्धिद्यादि जो भावना।
जो धरें सोलहों तीर्थपद पावना।।
वो सकल विश्व में धर्म नेता बने।
धर्मचक्राधिपति[2] सर्ववेत्ता बने।।2।।

पंचकल्याण भर्ता जगत वंद्य हो।
प्रातिहार्यों सुआठों से अभिनंद्य हो।।
जन्म से ही उन्हें दश चमत्कार हों।
केवलज्ञान लक्ष्मी के भरतार हो।।3।।

1. द्रव्य, क्षेत्र, काल, भव और भाव ये पाँच संसार हैं। 2. धर्मचक्र के स्वामी।

पूर्ण संज्ञान के दश सुअतिशय कहे।
देवकृत चौदहों अतिशयों को लहें।।
नाथ चौंतीस अतिशय महागुण भरें।
मुख्य त्रेसठ गुणों से महा सुख धरें।।4।।

मैं करूँ भक्ति से नित्य आराधना।
हो मुझे आत्म संपत्ति की साधना।।
फेर ना हो जनम मृत्यु का धारना।
ज्ञानमति पूर्ण कैवल्यमय पारना।।5।।

– घत्ता –

जय जय श्रीजिनवर, करम भरमहर, जय शिवसुंदरि के भर्ता।
मैं पूजूँ ध्याऊँ, तुम गुण गाऊँ, निजपद पाऊँ दुख हर्ता।।6।।

ॐ ह्रीं सकलजिनगुणसंपद्भ्यो जयमाला पूणार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– गीताछंद –

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, जिनगुण सुसंपति व्रत करें।
व्रत पूर्णकर प्रद्योत हेतू, यज्ञ उत्सव विधि करें।।
वे विश्व में संपूर्ण सुखकर, इंद्र चक्रीपद धरें।
फिर 'ज्ञानमति' से पूर्ण गुणमय, तूर्ण[1] शिवलक्ष्मी वरें।।1।।

1. शीघ्र ही।

प्रथम वलय पूजा

अथ स्थापना

– गीताछंद –

दर्शनविशुद्धी आदि सोलह, भावना भवनाशिनी।
जो भावते वे पावते, अति शीघ्र ही शिवकामिनी[1]।।
हम नित्य श्रद्धा भाव से, इनकी करें आराधना।
पूजा करें वसुद्रव्य[2] ले, करके विधीवत् थापना।।1।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणभावनासमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणभावनासमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणभावनासमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

– अथाष्टक –

चाल – चौबीसों श्री जिनचंद.....

पयसागर[3] को जल स्वच्छ, हाटक[4] भृंग भरूँ।
जिनपद में धारा देत, कलिमल दोष हरूँ।।
वर सोलह कारण भाय, तीरथनाथ बनें।
जो पूजें मन वच काय, कर्म पिशाच हनें।।1।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणभावना जिनगुणसंपद्भ्यो जन्मजरा-मृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयज[5] चंदन कर्पूर, केशर संग घिसा।
जिनगुण पूजा कर शीघ्र, भव भव दुःख पिसा।।
वर सोलह कारण भाय, तीरथनाथ बनें।
जो पूजें मन वच काय, कर्म पिशाच हनें।।2।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणभावना जिनगुणसंपद्भ्यो संसारताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

1. शिवरमणी। 2. आठ द्रव्य। 3. क्षीरसागर। 4. सोना। 5. मलयागिरि पर उत्पन्न हुआ।

उज्ज्वल शशि रश्मि समान, अक्षत धोय लिये।
अक्षय पद पावन हेतु, सन्मुख पुंज दिये।।
वर सोलह कारण भाय, तीरथनाथ बनें।
जो पूजें मन वच काय, कर्म पिशाच हनें।।3।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणभावना जिनगुणसंपद्भ्यो अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

चंपक सुम[1] हरसिंगार, सुरभित भर लीने।
भवविजयी[2] जिनपद अग्र, अर्पण कर दीने।।
वर सोलह कारण भाय, तीरथनाथ बनें।
जो पूजें मन वच काय, कर्म पिशाच हनें।।2।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणभावना जिनगुणसंपद्भ्यो कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

नानाविध घृत पकवान, अमृत सम लाऊँ।
निज क्षुधा निवारण हेतु, पूजत सुख पाऊँ।।
वर सोलह कारण भाय, तीरथनाथ बनें।
जो पूजें मन वच काय, कर्म पिशाच हनें।।5।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणभावना जिनगुणसंपद्भ्यो क्षुधारोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कंचनदीपक की ज्योति, दशदिश ध्वाँत[3] हरे।
जिन पूजा भ्रमतम टार, भेद विज्ञान करे।।
वर सोलह कारण भाय, तीरथनाथ[4] बनें।
जो पूजें मन वच काय, कर्म पिशाच हनें।।6।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणभावना जिनगुणसंपद्भ्यो मोहांधकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णागरु धूप सुगंध, खेवत धूम्र उड़े।
निज अनुभव सुख से दुष्ट, कर्मन भस्म उड़े।।

1. पुष्प। 2. कामदेव का विजेता। 3. अंधकार। 4. तीर्थंकर।

वर सोलह कारण भाय, तीरथनाथ बनें।
जो पूजें मन वच काय, कर्म पिशाच हनें।।7।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणभावना जिनगुणसंपद्भ्यो अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पिस्ता अखरोट बदाम, एला थाल भरे।
जिनपद पूजत तत्काल, सब सुख आन वरें।।
वर सोलह कारण भाय, तीरथनाथ बनें।
जो पूजें मन वच काय, कर्म पिशाच हनें।।8।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणभावना जिनगुणसंपद्भ्यो मोक्षफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत पुष्प, नेवज दीप लिया।
वर धूप फलों से पूर्ण, तुम पद अर्घ्य दिया।।
वर सोलह कारण भाय, तीरथनाथ बनें।
जो पूजें मन वच काय, कर्म पिशाच हनें।।9।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणभावना जिनगुणसंपद्भ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

सकल जगत में शांतिकर, शांतिधार सुखकार।
झारी से धारा करूँ, सकल संघ हितकर।।10।।

शांतये शांतिधारा।

कुंद कमल बेला वकुल, पुष्प सुगंधित लाय।
जिनगुण हेतू मैं करूँ, पुष्पांजलि सुखदाय।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

चाल– मेरी भावना.....

जो पचीस मल दोष विवर्जित, आठ अंग से पूर्ण रहा।
भक्ती आदी आठ गुणों युत, सम्यग्दर्शन शुद्ध कहा।।

जल गंधादिक अष्ट द्रव्य ले, पूजत ही भवसिंधु तिरूँ।
परमानंद सुखामृत पीकर, भवकानन में नाहिं फिरूँ।।1।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा दर्शनविशुद्धिभावनायै जिनगुणसंपदे मुक्तिपद कारणस्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्शन ज्ञान चरित्र तथा, उपचार विनय ये चार कहें।
इनसे सहित सदा जिनवचरत, भविजन शिव का द्वार लहें।।
जल गंधादिक अष्ट द्रव्य ले, पूजत ही भवसिंधु तिरूँ।
परमानंद सुखामृत पीकर, भवकानन में नाहिं फिरूँ।।2।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा विनयसंपन्नताभावनायै जिनगुणसंपदे मुक्तिपद कारणस्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शील और व्रत के पालन में, निरतिचार जो रहें सदा।
सहसअठारह शीलपूर्णकर, निजआतमरत रहें सदा।।
जल गंधादिक अष्ट द्रव्य ले, पूजत ही भवसिंधु तिरूँ।
परमानंद सुखामृत पीकर, भवकानन में नाहिं फिरूँ।।3।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै जिनगुणसंपदे मुक्तिपद कारणस्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो संतत ही चार तरह के, अनुयोगों[1] का मनन करें।
पढ़ें पढ़ावें गुणें गुणावें, वे ही श्रुतमय तीर्थ करें।।
जल गंधादिक अष्ट द्रव्य ले, पूजत ही भवसिंधु तिरूँ।
परमानंद सुखामृत पीकर, भवकानन में नाहिं फिरूँ।।4।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा अभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै जिनगुणसंपदे मुक्तिपद कारणस्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भवतन भोगविरागी होकर, सत्यधर्म में प्रेम करें।
वे संवेग भावना बल से, स्वात्मसुधारसपान करें।।
जल गंधादिक अष्ट द्रव्य ले, पूजत ही भवसिंधु तिरूँ।
परमानंद सुखामृत पीकर, भवकानन में नाहिं फिरूँ।।5।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा संवेगभावनायै जिनगुणसंपदे मुक्तिपद कारणस्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग, द्रव्यानुयोग।

यथाशक्ति जो चार दान औ, रत्नत्रय का दान करें।
वे प्राणी वर त्यागधर्म से, सुखमय केवलज्ञान वरें।।
जल गंधादिक अष्ट द्रव्य ले, पूजत ही भवसिंधु तिरूँ।
परमानंद सुखामृत पीकर, भवकानन में नाहिं फिरूँ।।6।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा शक्तितस्त्यागभावनायै जिनगुणसंपदे मुक्तिपद कारणस्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अनशन आदी बाह्यतपों को, यथाशक्ति रुचि सहित करें।
प्रायश्चित्त विनय वैयावृत, आदिक से मन शुद्ध करें।।
जल गंधादिक अष्ट द्रव्य ले, पूजत ही भवसिंधु तिरूँ।
परमानंद सुखामृत पीकर, भवकानन में नाहिं फिरूँ।।7।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा शक्तितस्तपोभावनायै जिनगुणसंपदे मुक्तिपद कारणस्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

साधूजन मन समाधान कर, धर्म-शुक्ल में अचल करें।
साधुसमाधी पालन करके, तीर्थंकर पद अमल करें।।
जल गंधादिक अष्ट द्रव्य ले, पूजत ही भवसिंधु तिरूँ।
परमानंद सुखामृत पीकर, भवकानन में नाहिं फिरूँ।।8।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा साधुसमाधिभावनायै जिनगुणसंपदे मुक्तिपद कारणस्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रासुक औषधि आदि वस्तु से, मुनि की वैयावृत्य करें।
संयम साधक, मन को रुचिकर, सेवा कर बहुपुण्य भरें।।
जल गंधादिक अष्ट द्रव्य ले, पूजत ही भवसिंधु तिरूँ।
परमानंद सुखामृत पीकर, भवकानन में नाहिं फिरूँ।।9।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा वैयावृत्यकरणभावनायै जिनगुणसंपदे मुक्तिपद कारणस्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छ्यालिस गुण धर दोष अठारह, शून्य प्रभू अर्हंत कहे।।
समवसरण में राजित जिनवर, उनकी भक्ती नित्य रहे।।
जल गंधादिक अष्ट द्रव्य ले, पूजत ही भवसिंधु तिरूँ।
परमानंद सुखामृत पीकर, भवकानन में नाहिं फिरूँ।।10।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा अर्हद्भक्तिभावनायै जिनगुणसंपदे मुक्तिपद कारणस्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचाचार स्वयं पालें नित, शिष्यों को भी पलवावें।
शिक्षा दीक्षा प्रायश्चित दे, सूरी सबके मन भावें।।
जल गंधादिक अष्ट द्रव्य ले, पूजत ही भवसिंधु तिरूँ।
परमानंद सुखामृत पीकर, भवकानन में नाहिं फिरूँ।।11।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा आचार्यभक्तिभावनायै जिनगुणसंपदे मुक्तिपद कारणस्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वादशांगमय श्रुत के ज्ञाता, श्रुतपारंगत गुरू कहें।
अथवा तत्कालिक[1] पूरण श्रुत, जाने बहुश्रुत गुरू रहें।।
जल गंधादिक अष्ट द्रव्य ले, पूजत ही भवसिंधु तिरूँ।
परमानंद सुखामृत पीकर, भवकानन में नाहिं फिरूँ।।12।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा बहुश्रुतभक्तिभावनायै जिनगुणसंपदे मुक्तिपद कारणस्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवर भाषित प्रवचन में रत, प्रवचन भक्ति धरें मन में।
अथवा चतुःसंघ[2] भक्ती में, रत जो उन पद पूजूँ मैं।।
जल गंधादिक अष्ट द्रव्य ले, पूजत ही भवसिंधु तिरूँ।
परमानंद सुखामृत पीकर, भवकानन में नाहिं फिरूँ।।13।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा प्रवचनभक्तिभावनायै जिनगुणसंपदे मुक्तिपद कारणस्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आवश्यक[3] की हानि न करते, समय-समय निज क्रिया करें।
षट् आवश्यक के बल निश्चय, आवश्यक को पूर्ण करें।।
जल गंधादिक अष्ट द्रव्य ले, पूजत ही भवसिंधु तिरूँ।
परमानंद सुखामृत पीकर, भवकानन में नाहिं फिरूँ।।14।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा आवश्यकापरिहाणिभावनायै जिनगुणसंपदे मुक्तिपद कारणस्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शिवपुर मार्ग प्रभावन करते, विद्या, तप दानादिक से।
मार्गप्रभावन भावना भाकर, निज आतम पावन करते।।
जल गंधादिक अष्ट द्रव्य ले, पूजत ही भवसिंधु तिरूँ।
परमानंद सुखामृत पीकर, भवकानन में नाहिं फिरूँ।।15।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा मार्गप्रभावनाभावनायै जिनगुणसंपदे मुक्तिपद कारणस्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. वर्तमानकाल के। 2. मुनि, आर्यिका, श्रावक, श्राविका। 3. नियम से करनेयोग्य क्रियाएँ।

प्रवचन में वत्सलता धारें, जिनवच रत में प्रीति धरें।
चार संघ में गाय वत्सवत्, सहज प्रेम भव भीति हरे।।
जल गंधादिक अष्ट द्रव्य ले, पूजत ही भवसिंधु तिरूँ।
परमानंद सुखामृत पीकर, भवकानन में नाहिं फिरूँ।।16।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा प्रवचनवत्सलत्वभावनायै जिनगुणसंपदे मुक्तिपद कारणस्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– पूर्णार्घ्य –

सोलह कारण भावन जग में, पुण्य सातिशय की जननी।
तीर्थंकर पद की कारण हैं, निश्चित भवसागर तरणी।।
जल गंधादिक अष्ट द्रव्य ले, पूजत ही भवसिंधु तिरूँ।
परमानंद सुखामृत पीकर, भवकानन में नाहिं फिरूँ।।17।।

ॐ दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणभावनाभ्यो जिनगुणसंपद्भ्यो मुक्तिपदकारणस्वरूपाभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जयमाला

– दोहा –

स्वातम रस पीयूष से, तृप्त हुए जिनराज।
सोलह कारण भावना, भाय हुये सिरताज।।1।।

– सोमवल्लरी छंद (चामर छंद) –

दर्श की विशुद्धि जो पचीस दोष शून्य है।
आठ अंग से प्रपूर्ण सप्त[1] भीति शून्य है।।
सत्य ज्ञान आदि तीन रत्न में विनीत जो।
साधुओं में नम्रवृत्ति धारता प्रवीण वो।।1।।
शील में व्रतादि में सदोषवृत्ति[2] ना धरें।
विदूर[3] अतीचार से तृतीय भावना धरें।।
ज्ञान के अभ्यास में सदैव लीनता धरें।
भावना अभीक्ष्ण ज्ञान मोहध्वांत को हरें।।2।।

1. सात भय। 2. दोष सहित प्रवृत्ति। 3. बहुत दूर।

देह मानसादि दुःख से सदैव भीरुता।
भावना संवेग से समस्त मोह जीतता।।
चार संघ को चतुः प्रकार दान जो करें।
सर्व दुःख से छुटें सुज्ञान संपदा भरें।।3।।

शुद्ध तप करें समस्त कर्म को सुखावते।
साधु की समाधि में समस्त विघ्न टारते।।
रोग कष्ट आदि में गुरूजनों कि सेव जो।
प्रासुकादि औषधी सुदेत पुण्यहेतु जो।।4।।

भक्ति अरीहंत, सूरि, बहुश्रुतों की भी करें।
प्रवचनों की भक्ति भावना से भवदधी तरें।।
छै क्रिया अवश्य करण योग्य काल में करें।
मार्ग[2] की प्रभावना सुधर्म द्योत[3] को करें।।5।।

वत्सलत्व[4] प्रवचनों में धर्म वात्सल्य है।
रत्नत्रयधरों में सहज प्रीति धर्म सार है।।
सोलहों सुभावना पुनीत भव्य को करें।
तीर्थनाथ संपदा सुदेय मुक्ति भी करें।।6।।

वंदना करूँ पुनः पुनः करूँ उपासना।
अर्चना करूँ पुनः पुनः करूँ सुसाधना।।
मैं अनंत दुःख से बचा चहूँ प्रभो! सदा।
ज्ञानमती संपदा मिले अनंत सौख्यदा।।7।।

दोहा– **तीर्थंकर पद हेतु ये, सोलह भावन सिद्ध।**
जो जन पूजें भाव से, लहें अनूपम सिद्धि।।8।।

ॐ ह्रीं दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणभावनाभ्यो जयमाला पूणार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गीताछंद– **जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, जिनगुण सुसंपति व्रत करें।**
व्रत पूर्ण कर प्रद्योत हेतू, यज्ञ उत्सव विधि करें।।
वे विश्व में संपूर्ण सुखकर, इन्द्र चक्री पद धरें।
फिर ज्ञानमति से पूर्ण गुणमय, तूर्ण शिवलक्ष्मी वरें।।1।।

1. उपाध्याय मुनि। 2. मोक्षमार्ग। 3. प्रकाश। 4. वत्सलभाव।

द्वितीय वलय पूजा

अथ स्थापना

– गीता छंद –

वरपंच कल्याणक जगत् में, सर्वजन से वंद्य हैं।
त्रैलोक्य में अति क्षोभ कर, सुर इन्द्रगण अभिनंद्य हैं।।
मैं पंचमी[1] गति प्राप्ति हेतू, पंच कल्याणक जजूँ।
आह्वाननादी विधि करूँ, संपूर्ण कल्याणक भजूँ।।1।।

ॐ ह्रीं पंचमहाकल्याणकसमूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं पंचमहाकल्याणकसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं पंचमहाकल्याणकसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

– अथाष्टक (भुजंग प्रयात छंद) –

पयोसिंधु को नीर झारी भराऊँ।
प्रभो आपके पाद धारा कराऊँ।।
महापंचकल्याणकों को जजूँ मैं।
महापंचसंसार दुख से बचूँ मैं।।1।।

ॐ ह्रीं पंचमहाकल्याणकेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुगंधीत चंदन कपूरादि वासा।
चढ़ाते तुम्हें सर्व संताप नाशा।।
महापंचकल्याणकों को जजूँ मैं।
महापंचसंसार दुख से बचूँ मैं।।2।।

ॐ ह्रीं पंचमहाकल्याणकेभ्यो संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

पयोराशि[2] के फेन सम तंदुलों को।
चढ़ाऊँ तुम्हें सौख्य अक्षय मिले जो।।
महापंचकल्याणकों को जजूँ मैं।
महापंचसंसार दुख से बचूँ मैं।।3।।

ॐ ह्रीं पंचमहाकल्याणकेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

1. सिद्धगति। 2. क्षीरसागर।

जुही केवड़ा चंपकादी सुमन हैं।
तुम्हें पूजते काम व्याधी शमन है।।
महापंचकल्याणकों को जजूँ मैं।
महापंचसंसार दुख से बचूँ मैं।।4।।

ॐ ह्रीं पंचमहाकल्याणकेभ्यो कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

कलाकंद लाडू भरा थाल लाऊँ।
क्षुधा डाकिनी नाश हेतू चढ़ाऊँ।।
महापंचकल्याणकों को जजूँ मैं।
महापंचसंसार दुख से बचूँ मैं।।5।।

ॐ ह्रीं पंचमहाकल्याणकेभ्यो क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मणीदीप ज्योती भुवन को प्रकाशे।
करूँ आरती मोह अंधेर नाशे।।
महापंचकल्याणकों को जजूँ मैं।
महापंचसंसार दुख से बचूँ मैं।।6।।

ॐ ह्रीं पंचमहाकल्याणकेभ्यो मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगनि पात्र में धूप खेऊं दशांगी।
करम धूम्र फैले चहुँदिक सुगंधी।।
महापंचकल्याणकों को जजूँ मैं।
महापंचसंसार दुख से बचूँ मैं।।7।।

ॐ ह्रीं पंचमहाकल्याणकेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

नरंगी मुसम्बी अनंनास लाऊँ।
महामोक्षफल हेतु आगे चढ़ाऊँ।।
महापंचकल्याणकों को जजूँ मैं।
महापंचसंसार दुख से बचूँ मैं।।8।।

ॐ ह्रीं पंचमहाकल्याणकेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जलादी वसूद्रव्य से थाल भरके।
चढ़ाऊँ तुम्हें अर्घ्य संसार उर के।।

महापंचकल्याणकों को जजूँ मैं।
महापंचसंसार दुख से बचूँ मैं।।9।।

ॐ ह्रीं पंचमहाकल्याणकेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– दोहा –

सकल जगत में शांतिकर, शांतिधार सुखकार।
जिनपद में धारा करूँ, सकल संघ हितकार।।10।।

शांतये शांतिधारा।

सुरतरु के सुरभित सुमन, सुमनस चित्त हरंत।
पुष्पांजलि अर्पण करत, मिटता दुःख तुरंत।।11।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

– गीताछंद –

छह मास पहले गर्भ आगम[1], से रतन बरसें यहाँ।
छप्पन कुमारी देवियाँ, जिनमात को अर्चें यहाँ।।
सोलह सुपन से गर्भ मंगल, सूचना होती यहाँ।
हम गर्भ कल्याणक जजें, वसु अर्घ्य ले कर में यहाँ।।1।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा स्वर्गावतरणगर्भकल्याणकजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिन जन्म से सुरलोक में, घंटादि बाजे बज उठें।
जिन जन्म उत्सव के लिए, इन्द्रादि आसन कँप उठें।।
सुरशैल[2] पर अभिषेक कर, प्रभु को पुनः लाते यहाँ।
हम जन्म कल्याणक जजें, वसु अर्घ्य ले कर में यहाँ।।2।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा जन्माभिषेककल्याणकजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भव भोग तनु से हो विरत, द्वादश अनुप्रेक्षा करें।
लौकांतिकों का संस्तवन, सुन नाथ फिर दीक्षा धरें।।

---

1. गर्भ में आने से। 2. सुदर्शनमेरु।

इन्द्रादि सुरगण कर रहे, दीक्षा महोत्सव विधि यहाँ।
हम निष्क्रमण[1] कल्याण पूजें, अर्घ्य ले कर में यहाँ।।3।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा परिनिष्क्रमणकल्याणकजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु शुक्ल ध्यानानल[2] जला, सब घातिया को ज्वालते।
कैवल्य लक्ष्मी पाय के, द्वादश गणों में राजते।।
निज दिव्य ध्वनि पीयूष से, भवि खेत को सींचें यहाँ।
हम ज्ञानकल्याणक जजें, वसु अर्घ्य ले कर में यहाँ।।4।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा केवलज्ञानकल्याणकजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यमराज[3] को जड़मूल से, संहार कर शिवपति बने।
स्वात्मोत्थ[4] परमाल्हाद सुख, संतृप्त त्रिभुवनपति बने।।
निर्वाण कल्याणक महोत्सव, सुर तभी करते यहाँ।
हम मोक्षकल्याणक जजें, वसु अर्घ्य ले कर में यहाँ।।5।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा निर्वाणकल्याणकजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

गर्भ जन्म तप ज्ञान अरू, कल्याणक निर्वाण।
पाँचों को पूर्णार्घ्य ले, पूजूँ हो कल्याण।।6।।

ॐ ह्रीं पंचमहाकल्याणकेभ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जयमाला

–सोरठा–

परम पुण्यमय तीर्थ, तीर्थंकर तिहुँलोक में।
शरण गही धर प्रीति, कर्म पंक प्रक्षालने।।1।।

1. तप। 2. अग्नि। 3. मृत्यु। 4. अपनी आत्मा से उत्पन्न।

–रोला छंद–

छह महिने ही पूर्व, पृथ्वी पर आने से।
अतिशय पुण्य प्रभाव, दिव से च्युति पाने से।।
रत्न बरसते नित्य, नभ से पंद्रह मासा।
श्री ह्री देवी आदि, सेव करें जिनमाता।।1।।

सोलह स्वप्न प्रदर्श, मात गरभ जब बसते।
इन्द्रादिक सुर आय, गर्भ महोत्सव करते।।
मति श्रुत अवधि सुज्ञान, तुमको नित्य रहे हैं।
गर्भ विषे भी आप, सुख से तिष्ठ रहे हैं।।2।।

जन्म समय तत्काल, इन्द्रन आसन कंपे।
नमन करें तत्काल, सुरगण तुम गुण जंपे।।
जिनशिशु सद्योजात[1] मेरु शिखर ले जाके।
इन्द्र करें अभिषेक, उत्सव अधिक रचाके।।3।।

स्वर्गों के ही वस्त्र, भोजन आदि सुखन में।
बाल्य समय सुरसंग, खेलें मात अंगन में।।
जब होवे वैराग्य, लौकांतिक सुर आते।
जिनगुणमंगलकीर्ति, गाकर पुण्य कमाते।।4।।

पुनः इन्द्रगण आय, परिनिष्क्रमण[2] मनावें।
महामहोत्सव साज, करके पुण्य बढ़ावें।।
प्रभू महाव्रतधार, आतम ध्यान धरे हैं।
कर्म घातिया चूर, केवलज्ञान वरे हैं।।5।।

समवसरण रच देव, ज्ञान कल्याणक पूजें।
जब जिन करत विहार, जनमनपावन हूजें।।
भव्य अनंतानंत, धर्मामृत को पीते।
जन्म मरण की व्याधि, नाश करमरिपु जीतें।।6।।

1. तत्काल पैदा हुये। 2. तप कल्याणक।

जिनवर योग निरोध, करके कर्म जलावें।
तत्क्षण शिवतिय संग, लोक शिखर पर जावें।।
सकलसुरासुर आय, मोक्षकल्याणक पूजें।
जिनपद पंकज पूज, भविजन अघरिपु[1] धूजें।।7।।

इसविध पंचकल्याण, जिनगुण नित्य जजूँ मैं।
पंचभ्रमण[2] चकचूर[3], सर्वकल्याण भजूँ मैं।।
परमसुखास्पद[4] धाम, परमानंदस्वरूपी।
'ज्ञानमती' से पूर्ण, पाऊँ मैं चिद्रूपी।।8।।

– दोहा –

पंच महाकल्याणमय, जिनगुणसंपद जान।
जो जन पूजें भाव से, लहें सौख्य निर्वाण।।9।।

ॐ ह्रीं पंचमहाकल्याणक जिनगुणसंपद्भ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

1. पापरूपी शत्रु। 2. पंचपरिवर्तन। 3. नष्ट कर। 4. सुख का स्थान।

तृतीय वलय पूजा

अथ स्थापना

– गीताछंद –

शुभ प्रातिहार्य सुआठ जिनगुणसंपदा सूचित करें।
तीनों जगत की ऋद्धियाँ, इस भांति से प्रभु को वरें।।
आनंदकंद महान परमानंद अमृत विस्तरें।
जो भव्यजन उन पूजते, वे स्वात्मरस अमृत भरें।।1।।

ॐ ह्रीं अष्टमहाप्रातिहार्यजिनगुणसंपत् समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अष्टमहाप्रातिहार्यजिनगुणसंपत् समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अष्टमहाप्रातिहार्यजिनगुणसंपत् समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

– अथाष्टक (अडिल्लछंद) –

सुरगंगा[1] को नीर कनक झारी भरूँ।
श्री जिनवर पद पूज, व्यथा सारी हरूँ।।
प्रातिहार्य वर आठ सु जिनगुण संपदा।
जो अर्चें धर प्रीति लहें सुख संपदा।।1।।

ॐ ह्रीं अष्टमहाप्रातिहार्य जिनगुणसंपद्भ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्टगंध वर सुरभित चंदन लाइया।
सकल तापहर जिनवर चरण चढ़ाइया।।
प्रातिहार्य वर आठ सु जिनगुण संपदा।
जो अर्चें धर प्रीति लहें सुख संपदा।।2।।

ॐ ह्रीं अष्टमहाप्रातिहार्य जिनगुणसंपद्भ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

1. आकाश गंगा।

उत्तम अक्षत धोय अखंडित लाइया।
कर्म पुंज क्षय हेतू पुंज रचाइया।।
प्रातिहार्य वर आठ सु जिनगुण संपदा।
जो अर्चें धर प्रीति लहें सुख संपदा।।3।।

ॐ ह्रीं अष्टमहाप्रातिहार्य जिनगुणसंपद्भ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

मौलसिरी औ पारिजात सुम लायके।
पूजूं श्री जिनपादपद्म हरषाय के।।
प्रातिहार्य वर आठ सु जिनगुण संपदा।
जो अर्चें धर प्रीति लहें सुख संपदा।।4।।

ॐ ह्रीं अष्टमहाप्रातिहार्य जिनगुणसंपद्भ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

घेवर फेनी बरफी मोदक[1] आदि ले।
स्वातम अनुभव हेतु जजूँ तुम पद भले।।
प्रातिहार्य वर आठ सु जिनगुण संपदा।
जो अर्चें धर प्रीति लहें सुख संपदा।।5।।

ॐ ह्रीं अष्टमहाप्रातिहार्य जिनगुणसंपद्भ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कनक पात्र में दीप जलाकर लाइया।
अंतर ज्योती हेतु जिनेश्वर ध्याइया।।
प्रातिहार्य वर आठ सु जिनगुण संपदा।
जो अर्चें धर प्रीति लहें सुख संपदा।।6।।

ॐ ह्रीं अष्टमहाप्रातिहार्य जिनगुणसंपद्भ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

धूप सुगंधित अग्नि पात्र में खेवते।
कर्म शत्रु को नाश करूँ तुम सेवते।।

1. लड्डू।

प्रातिहार्य वर आठ सु जिनगुण संपदा।
जो अर्चें धर प्रीति लहें सुख संपदा।।7।।

ॐ ह्रीं अष्टमहाप्रातिहार्य जिनगुणसंपद्भ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

केला एला दाडिम आदिक फल लिये।
मोक्ष महाफल हेतु नाथ पद अर्चिये।।
प्रातिहार्य वर आठ सु जिनगुण संपदा।
जो अर्चें धर प्रीति लहें सुख संपदा।।8।।

ॐ ह्रीं अष्टमहाप्रातिहार्य जिनगुणसंपद्भ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंधादिक अर्घ्य मिलाकर थाल में।
तीर्थंकर पदपद्म जजूँ त्रयकाल मैं।।
प्रातिहार्य वर आठ सु जिनगुण संपदा।
जो अर्चें धर प्रीति लहें सुख संपदा।।9।।

ॐ ह्रीं अष्टमहाप्रातिहार्य जिनगुणसंपद्भ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– दोहा –

सकल जगत में शांतिकर, शांतिधार सुखकार।
जिनपद में धारा करूँ, सकलसंघ हितकार।।

शांतये शांतिधारा।

सुरतरु[1] के सुरभित सुमन, सुमनस चित्त हरंत।
पुष्पांजलि अर्पण करत, मिटता दुःख तुरंत।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

– शंभु छंद –

विकसित[2] पुष्पों के गुच्छों से, तरुवर अशोक है शोभ रहा।
रत्नों की अनुपम कांती से, जन-जन के मन को मोह रहा।।

1. कल्पवृक्ष। 2. खिले हुये।

भविजन के मन का शोक हरे, यह प्रातिहार्य महिमाशाली।
हम पूजें अर्घ्य चढ़ा करके, जिनगुण संपत्ती मणिमाली।।1।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः असिआउसा अशोकवृक्षमहाप्रातिहार्यजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सुर द्वारा नभ[1] से वर्षाये, ये खिले कुसुम मानों हँसते।
श्री जिनवर का शुभ उज्ज्वल यश, मानों प्रमुदित वर्णन करते।।
भविजन के मन को विकसाता, यह प्रातिहार्य महिमाशाली।
हम पूजें अर्घ्य चढ़ा करके, जिनगुण संपत्ती मणिमाली।।2।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः असिआउसा सुरपुष्पवृष्टिमहाप्रातिहार्यजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो सात शतक औ अट्ठारह, भाषामय जिनवर की वाणी।
जो स्याद्वाद पीयूष भरी, दिव्यध्वनि त्रिभुवन कल्याणी।।
नित भविजन के भवरोग हरे, यह प्रातिहार्य महिमाशाली।
हम पूजें अर्घ्य चढ़ा करके, जिनगुण संपत्ती मणिमाली।।3।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः असिआउसा दिव्यध्वनिमहाप्रातिहार्यजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यक्षों द्वारा ढोरे जाते, ये चौंसठ चमर बताते हैं।
जो श्री जिन आश्रय लेते हैं, वे निश्चित ऊपर जाते हैं।।
भविजन को ऊर्ध्वगतीकारी यह प्रातिहार्य महिमाशाली।
हम पूजें अर्घ्य चढ़ा करके, जिनगुण संपत्ती मणिमाली।।4।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः असिआउसा चतुःषष्टि चामर महाप्रातिहार्यजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नाना रत्नों से जड़ा हुआ, सिंहासन सुर नर मन मोहे।
प्रभु के तन की कांती से वह, शतगुणित चमकता नित सोहे।।

1. आकाश।

अनुपम वैभव को प्रगट करे, यह प्रातिहार्य महिमाशाली।।
हम पूजें अर्घ्य चढ़ा करके, जिनगुण संपत्ती मणिमाली।।5।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः असिआउसा सिंहासनमहाप्रातिहार्यजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के तन की द्युति ही मानो, भामंउल बन कर प्रागट हुई।
जन उसमें अपने सात भवों, को देख रहे हैं सही सही।।
भविजन वैराग्य बढ़ाने को, यह प्रातिहार्य महिमाशाली।
हम पूजें अर्घ्य चढ़ा करके, जिनगुण संपत्ती मणिमाली।।6।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः असिआउसा भामंडलमहाप्रातिहार्यजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

देवों की दुंदुभि बाज रही, मानो भविजन आह्वान करें।
आवो आवो हे भव्य जीव, जिनदर्शन कर निज भान करें।।
श्री जिन का गौरव प्रगट करे, यह प्रातिहार्य महिमाशाली।
हम पूजें अर्घ्य चढ़ा करके, जिनगुण संपत्ती मणिमाली।।7।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः असिआउसा देवदुंदुभिमहाप्रातिहार्यजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ये तीन छत्र शशि मंडल[1] सम, उनमें मुक्ता फल लटक रहे।
जिन देव देव के त्रिभुवन की, प्रभुता को मानो प्रगट कहें।।
भविजन का तीन[2] ताप शामक[3], यह प्रातिहार्य महिमाशाली।
हम पूजें अर्घ्य चढ़ा करके, जिनगुण संपत्ती मणिमाली।।8।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौ ह्रः असिआउसा छत्रत्रयमहाप्रातिहार्यजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– पूर्णार्घ्य (दोहा) –

तीर्थंकर के आठ ये, प्रातिहार्य जग सिद्ध।
पूजूँ पूरण अर्घ्य ले, पाऊँ जिनगुणरिद्ध।।9।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा अष्टमहाप्रातिहार्यजिनगुणसंपदे पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

1. चंद्रमंडल। 2. जन्म जरा मरण इन तीनों का संताप। 3. शमन करने वाला।

जयमाला

–दोहा–

परमशुद्ध परमात्मा, परमपुण्य की खान।
तुम गुणमणि माला कहूँ, स्वात्म सौख्य हित जान।।1।।

–अशोक पुष्प मंजरी छंद–

नाथ आप को निहार चर्म नेत्र से तथापि,
हर्ष हो महान् तीन लोक में न मावता।
ज्ञान नेत्र से यदी विलोक[1] लूं जिनेश आप,
तो पुनः कियंत[2] हर्ष हो न पार पावता।।
आप ही अनंत सौख्य राशि तेज पुंज देव,
आप ही त्रिलोक में अपूर्व कांतिमान हो।
योगिवृंद चित्तपद्म[3] के विकास हेतु सूर्य,
भव्यस्वांत[4] कौमुदी विकास हेतु चांद हो।।1।।

आपकी अनक्षरी[5] ध्वनी सुनें अनंत भव्य,
चित्त में धरें सदैव जन्म रोग टारते।
आप नाम मात्र को जपें यदी स्वचित्त में,
अनंत दुःख वार्धि से निजात्म को उबारते।।
आप ज्ञान हैं महान् तीन लोक के समान,
हों असंख्य लोक तो भी एक कोण में रहें।
सत्य में अनंत औ अनंत मान अभ्र[6] भी,
निलीन[7] आप ज्ञान में विशालता किती कहे।।2।।

आप भक्त के समीप सर्व सौख्य आय के,
अहं प्रथम[8] अहं प्रथम कि बुद्धि से हि धावते,
कल्पवृक्ष कामधेनु चिंतितार्थ दायिरत्न[9],
आपकी अचिन्त्य शक्ति देख के लजावते।।

1. देख लूँ। 2. कितना। 3. मनकमल। 4. मनरूपी सफेद कमल। 5. निरक्षरी। 6. आकाश। 7. रहते हैं। 8. मैं पहले, मैं पहले। 9. देने वाले रत्न।

सर्व सिद्धि दायिनी जिनेन्द्र भक्ति एक ली,
समस्त दुःख चूरणी धरा[1] विषे प्रसिद्ध है।
साधु वृंद के अनेक चित्त के विकल्प को,
क्षणेक में निवारणे अमोघ[2] शस्त्र सिद्ध है।।3।।

आप कीर्ति बार बार शास्त्र में सुनी अतः,
जिनेन्द्रदेव! आज आप शर्ण[3] आन के लिया।
तारिये न तारिये जंचे प्रभो सुकीजिये,
प्रमाण आप ही मुझे स्वचित्त में दृढ़ी किया।।
आज जो दयानिधान! भक्त पे दयार्द्रभाव,
कीजिये उबारिये अनंत दुःख सिंधु से।
ज्ञान दर्श सौख्य वीर्य संपदा निजात्म की जु
मोहशत्रु से अभी दिलाय दीजिए मुझे।।4।।

–दोहा–

प्रातिहार्य गुण के धनी, सिद्धि वधू के कांत।
'ज्ञानमती' सुख पूर्ण कर, करिये पूर्ण प्रशांत।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं अष्टमहाप्रातिहार्य जिनगुणसंपद्भ्यो जयमाला अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

–गीताछंद–

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से जिनगुणसुसंपति व्रत करें।
व्रत पूर्ण कर प्रद्योत हेतू यज्ञ उत्सव विधि करें।।
वे विश्व में संपूर्ण सुखकर इंद्रचक्री पद धरें।
फिर 'ज्ञानमति' से पूर्ण गुणमय तूर्ण शिवलक्ष्मी वरें।।1।।

1. पृथ्वी। 2.जो कभी खाली न जाये। 3. शरण।

चतुर्थ वलय की पूजा

अथ स्थापना

– गीताछंद –

जिन जन्म के अतिशय सहज दश विश्व में विख्यात हैं।
जो तीर्थकर्ता के अपूरब, पुण्य के फल ख्यात हैं।।
मैं नित्य जिनगुण संपदा को, पूजहूँ अति चाव से।
आह्वान करके अर्चना विधि, मैं करूँ अति भाव से।।1।।

ॐ ह्रीं अर्हं दशसहजातिशयजिनगुणसंपत् समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं अर्हं दशसहजातिशयजिनगुणसंपत् समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं अर्हं दशसहजातिशयजिनगुणसंपत् समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

– अथाष्टकं-गीताछंद –

गंगानदी का नीर निरमल, बाह्य मल शोधन करे।
जिनपाद पंकज[2] धार देते, कर्ममल तत्क्षण हरे।।
तीर्थेश के दश जन्म के, सहजातिशय जो पूजते।
निज आत्म सहजानंद[3] अनुभव, पाय दुख से छूटते।।1।।

ॐ ह्रीं दश सहजातिशयजिनगुणसंपद्भ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

वर अष्टगंध सुगंध शील, ताप सब तन की हरे।
जिनपाद पंकज पूजते, भव ताप को भी परिहरे।।
तीर्थेश के दश जन्म के, सहजातिशय जो पूजते।
निज आत्म सहजानंद अनुभव, पाय दुख से छूटते।।2।।

ॐ ह्रीं दश सहजातिशयजिनगुणसंपद्भ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

1. स्वभाव से, जन्म से हुए। 2. कमल। 3. स्वभाव से उत्पन्न-आत्मा से उत्पन्न।

उज्ज्वल अखंडित शालि सुरभित, पुंज तुम आगे धरूँ।
निजज्ञान सुख गुण पुंज हेतू, नाथ पद अर्चन करूँ।।
तीर्थेश के दश जन्म के, सहजातिशय जो पूजते।
निज आत्म सहजानंद अनुभव, पाय दुख से छूटते।।3।।

ॐ ह्रीं दश सहजातिशयजिनगुणसंपद्भ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बेला चमेली कुंद जूही, सर्वदिक् सुरभित करें।
मदनारि[1] जेता जिनचरण, पूजत सुमन सुमनस[2] करें।।
तीर्थेश के दश जन्म के, सहजातिशय जो पूजते।
निज आत्म सहजानंद अनुभव, पाय दुख से छूटते।।4।।

ॐ ह्रीं दश सहजातिशयजिनगुणसंपद्भ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

अमृत सदृश पकवान नाना, भांति के भर थाल में।
गुण सिंधु जिन पद पूजते, स्वात्मानुभव हो हाल में।।
तीर्थेश के दश जन्म के, सहजातिशय जो पूजते।
निज आत्म सहजानंद अनुभव, पाय दुख से छूटते।।5।।

ॐ ह्रीं दश सहजातिशयजिनगुणसंपद्भ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घृत दीप और कपूर ज्योती, बाह्य तम को परिहरे।
कैवल्य ज्योती पूजते, निजज्ञान ज्योती अघ हरे।।
तीर्थेश के दश जन्म के, सहजातिशय जो पूजते।
निज आत्म सहजानंद अनुभव, पाय दुख से छूटते।।6।।

ॐ ह्रीं दश सहजातिशयजिनगुणसंपद्भ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कृष्णागरू वरधूप सुरभित, खेवते जिन पास में।
सब दुरितशत्रू दूर भागें, पुण्य सागर पास में।।

1. कामदेव के विजेता। 2. अच्छा मन।

तीर्थेश के दश जन्म के, सहजातिशय जो पूजते।
निज आत्म सहजानंद अनुभव, पाय दुख से छूटते।।7।।

ॐ ह्रीं दश सहजातिशयजिनगुणसंपद्भ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

अंगूर दाडिम आम्र अमरख, सरस फल अर्पण करूँ।
निज आत्म गुण की प्राप्ति हेतू, आप पद अर्चन करूँ।।
तीर्थेश के दश जन्म के, सहजातिशय जो पूजते।
निज आत्म सहजानंद अनुभव, पाय दुख से छूटते।।8।।

ॐ ह्रीं दश सहजातिशयजिनगुणसंपद्भ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल गंध तंदुल पुष्प नेवज, दीप धूप फलार्घ्य ले।
त्रैलोक्यपति के पादसरसिज, पूजते शिवफल मिले।।
तीर्थेश के दश जन्म के, सहजातिशय जो पूजते।
निज आत्म सहजानंद अनुभव, पाय दुख से छूटते।।9।।

ॐ ह्रीं दश सहजातिशयजिनगुणसंपद्भ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– दोहा –

सकल जगत में शाँतिकर, शांतिधार सुखकार।
जिनपद में धारा करूँ, सकल संघ हितकार।।

शांतये शांतिधारा।

सुरतरु के सुरभित सुमन, सुमनस चित्त हरंत।
पुष्पांजलि अर्पण करत, मिटता दुःख तुरंत।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

– नरेन्द्र छंद –

तीर्थंकर के जन्म काल से, स्वेद[1] न तन में जानो।
मातु उदर से जन्में फिर भी, जन्म अपूरब मानो।।

1. पसीना।

अर्घ्य चढ़ाकर जिन गुण अतिशय, पूजूँ भक्ति बढ़ाके।
रोग शोक दुख संकट तत्क्षण, नाशूं जिनगुण गाके।।1।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा निःस्वेदत्व सहजातिशय जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर के निर्मल तन में, मल-मूत्रादि न होवें।
प्रभु के गुण का नाम मंत्र भी, भव भव का मल धोवे।।
अर्घ्य चढ़ाकर जिन गुण अतिशय, पूजूँ भक्ति बढ़ाके।
रोग शोक दुख संकट तत्क्षण, नाशूं जिनगुण गाके।।2।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा निर्मलत्व सहजातिशय जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर के जन्म समय से, तन में रुधिर[1] नहीं है।
दुग्ध सदृश है धवल रुधिर जो, अतिशय सहज सही है।।
अर्घ्य चढ़ाकर जिन गुण अतिशय, पूजूँ भक्ति बढ़ाके।
रोग शोक दुख संकट तत्क्षण, नाशूं जिनगुण गाके।।3।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा क्षीरगौररुधिरत्व सहजातिशय जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के तन की सुन्दर आकृति[2], समचतुरस्र बखानी।
नाम कर्म ब्रह्मा ने सचमुच, अनुपम रचना ठानी।।
अर्घ्य चढ़ाकर जिन गुण अतिशय, पूजूँ भक्ति बढ़ाके।
रोग शोक दुख संकट तत्क्षण, नाशूं जिनगुण गाके।।4।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा समचतुरस्रसंस्थान सहजातिशय जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वज्रवृषभनाराच संहनन, उत्तम प्रभु का जानो।
परमपुण्यमय अद्भुत तन को, गुण गाकर भव हानो।।

1. खून। 2. आकार।

अर्घ्य चढ़ाकर जिन गुण अतिशय, पूजूँ भक्ति बढ़ाके।
रोग शोक दुख संकट तत्क्षण, नाशूं जिनगुण गाके।।5।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा वज्रवृषभनाराचसंहनन सहजातिशय जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अतिशय सुन्दर रूप मनोहर, उपमा रहित सुहाता।
इन्द्र हजार नेत्र कर निरखे, तो भी तृप्ति न पाता।।
अर्घ्य चढ़ाकर जिन गुण अतिशय, पूजूँ भक्ति बढ़ाके।
रोग शोक दुख संकट तत्क्षण, नाशूं जिनगुण गाके।।6।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा सौरूप्य सहजातिशय जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तीर्थंकर के अनुपम तन में, अति सौगंध्य सुहावे।
इस गुण का अर्चन करके जन, यश सुरभी महकावें।।
अर्घ्य चढ़ाकर जिन गुण अतिशय, पूजूँ भक्ति बढ़ाके।
रोग शोक दुख संकट तत्क्षण, नाशूं जिनगुण गाके।।7।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा सौगन्ध्य सहजातिशय जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक हजार आठ लक्षण शुभ, प्रभु के तन में भासें।
एक एक लक्षण की पूजा, जिन लक्षण परकाशे।।
अर्घ्य चढ़ाकर जिन गुण अतिशय, पूजूँ भक्ति बढ़ाके।
रोग शोक दुख संकट तत्क्षण, नाशूं जिनगुण गाके।।8।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा सौलक्षण्य सहजातिशय जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बल अतुल्य तीर्थंकर तन का, तुलना नहीं जगत में।
इस गुण की पूजा करने से, आतम बल हो क्षण में।।
अर्घ्य चढ़ाकर जिन गुण अतिशय, पूजूँ भक्ति बढ़ाके।
रोग शोक दुख संकट तत्क्षण, नाशूं जिनगुण गाके।।9।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा अप्रमितवीर्य सहजातिशय जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रियहित वचन प्रभू के अनुपम, अमृतसम सुखदायी।
सरस्वती ने मुक्तकंठ से, जिनगुण महिमा गायी।।
अर्घ्य चढ़ाकर जिन गुण अतिशय, पूजूँ भक्ति बढ़ाके।
रोग शोक दुख संकट तत्क्षण, नाशूं जिनगुण गाके।।10।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा प्रियहितवादित्व सहजातिशय जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– पूर्णार्घ्य (दोहा) –

तीर्थंकर शिशु के सहज, दश अतिशय अभिराम।
पूरण अर्घ्य चढ़ाय मैं, पूजूँ विश्वललाम।।11।।

ॐ ह्रीं दश सहजातिशय जिनगुणसंपद्भ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जयमाला

– दोहा –

त्रिभुवन जन उद्धार की, करुण भावना चित्त।
तीर्थंकर पद पावते, गाऊँ तिन गुण नित्त।।1।।

चाल – हे दीनबंधु.....

जैवंत तीर्थमंत अतुल गुणनिधी भरें।
जैवंत देहमंत दश अतिशय सहज धरें।।
जो नाथ के इन अतिशयों की अर्चना करें।
लोकातिशायि[1] पुण्य की उपार्जना करें।।2।।

तन में न पसीना-नहीं मल मूत्र हो कभी।
पयसम[2] रुधिर हो समचतुष्क[3] सौम्य आकृती।।
होता है वज्र वृषभमय नाराच संहनन।
महिमानरूप तनसुगंध सहज सुलक्षण।।3।।

1. संसार में अलौकिक। 2. दूध के समान। 3. समचतुरस्र संस्थान।

परिमाण[1] रहित वीर्य हो प्रियहितकरी वाणी।
भविजन के जन्म रोग नाश हेतु कल्याणी।।
दश जन्म के अतिशय त्रिलोक पूज्य कहाते।
मुक्त्यंगना का आप में आकर्ष बढ़ाते।।4।।

सब लोक औ अलोक का साम्राज्य दिलाते।
फिर अंत में त्रैलोक्य के मस्तक पे बिठाते।।
सद्गुण अनंतानंत से भण्डार भराते।
आनन्त्य काल सौख्य सुधा[2] पान कराते।।5।।

मैं भक्ति भाव से गुणों की अर्चना करूँ।
अपने गुणों की प्राप्ति हेतु वंदना करूँ।।
हे नाथ! तुम प्रसाद से अब जन्म ना धरूँ।
बस 'ज्ञानमती' पूरिये अभ्यर्थना करूँ।।6।।

– घत्ता –

तीर्थंकर गुणगण, अनुपम निधि मणि, जो भविजन निजकंठ धेंार
सो शिवरमणी वर, अनुपमसुखकर, जिनगुणसंपति शीघ्र वरें।।7।।

ॐ ह्रीं जन्मसंबंधि दशसहजातिशय जिनगुणसंपद्भ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

– गीता छंद –

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, जिनगुणसुसंपति व्रत करें।
व्रतपूर्णकर प्रद्योत हेतू, यज्ञ उत्सव विधि करें।।
वे विश्व में संपूर्ण सुखकर, इंद्र चक्रीपद धरें।
फिर 'ज्ञानमति' से पूर्ण गुणमय तूर्ण शिव लक्ष्मी वरें।।1।।

1. अतुल्य। 2. अमृत।

अथ पंचमवलय पूजा

अथ स्थापना

– नरेन्द्र छंद –

केवल ज्योति प्रगट होते ही, दश अतिशय प्रगटे हैं।
अखिल[1] विश्व में शांती हेतू, अद्भुत गुण चमके हैं।।
तीर्थंकर के इन अतिशय को, पूजूँ मन वच मन से।
गुणरत्नाकर[2] में अवगाहन[3] कर छूटूँ भव वन से।।1।।

ॐ ह्रीं घातिक्षयजातिशयजिनगुणसंपत् समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं घातिक्षयजातिशयजिनगुणसंपत् समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं घातिक्षयजातिशयजिनगुणसंपत् समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

– अथाष्टकं –

चाल– नंदीश्वर पूजा की.....

क्षीरांबुधि जल अति स्वच्छ, प्रासुक भृंग[4] भरूँ।
जिनगुण की पूजन हेतु, धारा तीन करूँ।।
घातीक्षय[5] से उत्पन्न, अतिशय नित्य जजूँ।
निजघाति करम क्षय हेतु, जिनपद पद्म भजूँ।।1।।

ॐ ह्रीं घातिक्षयजातिशयजिनगुणसंपद्भ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयज चंदन कर्पूर, केशर मिश्र करूँ।
निज आतम गुण सौगंध्य, हेतू अर्च करूँ।।
घातीक्षय से उत्पन्न, अतिशय नित्य जजूँ।
निजघाति करम क्षय हेतु, जिनपद पद्म भजूँ।।2।।

ॐ ह्रीं घातिक्षयजातिशयजिनगुणसंपद्भ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

1. संपूर्ण। 2. समुद्र। 3. डुबकी लगाकर। 4. झारी। 5. चार घातिया कर्म।

मुक्तासम अक्षत श्वेत, जिनगुण सम सोहें।
मैं पुंज चढ़ाऊँ नित्य, अनुपम सुख हो हैं।।
घातीक्षय से उत्पन्न, अतिशय नित्य जजूँ।
निजघाति करम क्षय हेतु, जिनपद पद्म भजूँ।।3।।

ॐ ह्रीं घातिक्षयजातिशयजिनगुणसंपद्भ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

सुरतरु[1] के सुरभित पुष्प, नाना वर्ण लिये।
सौगंधित जिनपद पद्म, रुचि से भेंट किये।।
घातीक्षय से उत्पन्न, अतिशय नित्य जजूँ।
निजघाति करम क्षय हेतु, जिनपद पद्म भजूँ।।4।।

ॐ ह्रीं घातिक्षयजातिशयजिनगुणसंपद्भ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

बरफी पेड़ा पकवान, पायस[2] थाल भरे।
क्षुध रोग निवारण हेतु, तुम ढिंग भेंट करें।।
घातीक्षय से उत्पन्न, अतिशय नित्य जजूँ।
निजघाति करम क्षय हेतु, जिनपद पद्म भजूँ।।5।।

ॐ ह्रीं घातिक्षयजातिशयजिनगुणसंपद्भ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दीपक की ज्योति उद्योत[3], भ्रम तम दूर करे।
जिनगुण का अर्चन शीघ्र, भेद विज्ञान करे।।
घातीक्षय से उत्पन्न, अतिशय नित्य जजूँ।
निजघाति करम क्षय हेतु, जिनपद पद्म भजूँ।।6।।

ॐ ह्रीं घातिक्षयजातिशयजिनगुणसंपद्भ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दश गंध सुगंधित धूप, खेऊँ तुम आगे।
निज आतम अनुभव होय, कर्म अरी भागें।।

1. कल्पवृक्ष। 2. खीर। 3. प्रकाशमान।

घातीक्षय से उत्पन्न, अतिशय नित्य जजूँ।
निजघाति करम क्षय हेतु, जिनपद पद्म भजूँ।।7।।

ॐ ह्रीं घातिक्षयजातिशयजिनगुणसंपद्भ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

पिस्ता अखरोट बदाम, आम अनार लिये।
जिनगुण को अर्चूं नित्य, पाऊँ सौख्य हिये।।
घातीक्षय से उत्पन्न, अतिशय नित्य जजूँ।
निजघाति करम क्षय हेतु, जिनपद पद्म भजूँ।।8।।

ॐ ह्रीं घातिक्षयजातिशयजिनगुणसंपद्भ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन आदि मिलाय, उत्तम अर्घ्य करूँ।
जिनवर पद पद्म चढ़ाय, सम्यक् रत्न भरूँ।।
घातीक्षय से उत्पन्न, अतिशय नित्य जजूँ।
निजघाति करम क्षय हेतु, जिनपद पद्म भजूँ।।9।।

ॐ ह्रीं घातिक्षयजातिशयजिनगुणसंपद्भ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

–दोहा–

सकल जगत में शांतिकर, शांतिधार सुखकार।
जिनपद में धारा करूँ, सकल संघ हितकार।।

शांतये शांतिधारा।

सुरतरु के सुरभित सुमन, सुमनस चित्त हरंत।
पुष्पांजलि अर्पण करत, मिटता दुःख तुरंत।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

–शंभु छंद–

प्रभु घाति कर्म का क्षय करते, चउ शत कोसों दुर्भिक्ष टले।
जन-जन सुखकारी हो सुभिक्ष, यह अतिशय होता प्रगट भले।।

मैं वसुविध[1] अर्घ्य बना करके, जिनगुण की नित अर्चना करूँ।
अतिशय गुणराशी प्राप्ति हेतु, श्रद्धा से नित वंदना करूँ।।1।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा गव्यूतिशतचतुष्टयसुभिक्षत्व घातिक्षयजातिशयजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु घाति चतुष्टय क्षय करके, गगनांगण में ही गमन करें।
वे बीस हजार हाथ ऊँचे, शुभ समवसरण में अधर रहें।।
मैं वसुविध अर्घ्य बना करके, जिनगुण की नित अर्चना करूँ।
अतिशय गुणराशी प्राप्ति हेतु, श्रद्धा से नित वंदना करूँ।।2।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा गगनगमनत्व घातिक्षयजातिशय-जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के शरीर औ गमन आदि से, प्राणीवध नहिं हो सकता।
करुणारत्नाकर स्वामी का यह, अतिशय पूर्ण अभय करता।।
मैं वसुविध अर्घ्य बना करके, जिनगुण की नित अर्चना करूँ।
अतिशय गुणराशी प्राप्ति हेतु, श्रद्धा से नित वंदना करूँ।।3।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा अप्राणिवधत्व घातिक्षयजातिशय-जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलि[2] के कवलाहार[3] नहीं, क्षुध आदि अठारह दोष नहीं।
परमानंदामृत आस्वादी, प्रभु के सुख तृप्ती पूर्ण कही।।
मैं वसुविध अर्घ्य बना करके, जिनगुण की नित अर्चना करूँ।
अतिशय गुणराशी प्राप्ति हेतु, श्रद्धा से नित वंदना करूँ।।4।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा भुक्त्यभाव घातिक्षयजातिशयजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

केवलि जिन के उपसर्ग नहीं, हो सके कदाचित यह जानो।
बस कर्म असाता साता में, संक्रमण करे यह सरधानो।।

1. आठ प्रकार के द्रव्य से। 2. केवली भगवान्। 3. ग्रास रूप भोजन।

मैं वसुविध अर्घ्य बना करके, जिनगुण की नित अर्चना करूँ।
अतिशय गुणराशी प्राप्ति हेतु, श्रद्धा से नित वंदना करूँ।।5।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा उपसर्गाभाव घातिक्षयजातिशयजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु का मुख एक तरफ रहता, फिर भी चउ दिश में दीख रहा।
यह अतिशय अद्भुत चतुर्मुखी, सब जन-जन का मन मोह रहा।।
मैं वसुविध अर्घ्य बना करके, जिनगुण की नित अर्चना करूँ।
अतिशय गुणराशी प्राप्ति हेतु, श्रद्धा से नित वंदना करूँ।।6।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा चतुर्मुखत्व घातिक्षयजातिशयजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु सब विद्या के ईश्वर हैं, सब जनता के भी ईश्वर हैं।
सौ इंद्रों से वंदित गुरुवर, मुनिगण से वंद्य निरंतर हैं।।
मैं वसुविध अर्घ्य बना करके, जिनगुण की नित अर्चना करूँ।
अतिशय गुणराशी प्राप्ति हेतु, श्रद्धा से नित वंदना करूँ।।7।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा सर्वविद्येश्वर घातिक्षयजातिशयजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर केवलज्ञान प्रगट होते, नहिं छाया पड़ती है तन की।
परमौदारिक शुभ देह कहा, दीप्ती से लाजें रविगण भी।।
मैं वसुविध अर्घ्य बना करके, जिनगुण की नित अर्चना करूँ।
अतिशय गुणराशी प्राप्ति हेतु, श्रद्धा से नित वंदना करूँ।।8।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा अच्छायत्व घातिक्षयजातिशयजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नेत्रों की पलकें नहिं झपकें, फिर भी वे अंतर्दृष्टि कहे।
मानों अनिमिष दृग हो करके, करुणा से सब जग देख रहे।।
मैं वसुविध अर्घ्य बना करके, जिनगुण की नित अर्चना करूँ।
अतिशय गुणराशी प्राप्ति हेतु, श्रद्धा से नित वंदना करूँ।।9।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा अपक्ष्मस्पंदत्व घातिक्षयजातिशयजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्रभु के नख केश न बढ़ सकते, यह भी इक अतिशय तुम मानो।
बस पूर्ण ज्ञान के होते ही, त्रैकालिक वस्तु प्रगट जानो।।
मैं वसुविध अर्घ्य बना करके, जिनगुण की नित अर्चना करूँ।
अतिशय गुणराशी प्राप्ति हेतु, श्रद्धा से नित वंदना करूँ।।10।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा समाननखकेशत्व घातिक्षयजातिशय-जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– पूर्णार्घ्य (दोहा) –

जिन आतम गुण ज्ञान को, पूर्ण किया भगवान।
पूरण अर्घ्य चढ़ाय के, मैं पूजूँ धर ध्यान।।11।।

ॐ ह्रीं घातिक्षयजातिशयजिनगुणसंपद्भ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जयमाला

– दोहा –

मोहनीय द्वय आवरण, अंतराय को घात।
ज्ञान दर्श सुख वीर्य गुण, प्राप्त किया निर्बाध।।1।।

– स्रग्विणीछंद –

जै महासौख्य दातार भरतार हो।
जै महानंद करतार भव पार हो।।
पूरिये नाथ! मेरी मनोकामना।
हो सदा स्वात्मतत्वैक की भावना।।2।।

वान व्यंतर भवन वासि औ ज्योतिषी।
कल्पवासी सभी देव ध्याके सुखी।।
पूरिये नाथ! मेरी मनोकामना।
हो सदा स्वात्मतत्वैक की भावना।।3।।

इंद्र धरणेंद्र मनुजेंद्र वंदन करें।
योगि नायक सदा आप गुण उच्चरें।।

पूरिये नाथ! मेरी मनोकामना।
हो सदा स्वात्मतत्वैक की भावना।।4।।

मोह के वश्य हो नाथ मैं दुख सहा।
जो तिहुंलोक में भी भटकता रहा।।
पूरिये नाथ! मेरी मनोकामना।
हो सदा स्वात्मतत्वैक की भावना।।5।।

नर्क के दुःख की क्या कहूँ मैं कथा।
नाथ! तुम केवली सर्व जानो व्यथा।।
पूरिये नाथ! मेरी मनोकामना।
हो सदा स्वात्मतत्वैक की भावना।।6।।

योनि तिर्यंच में काल बीता घना।
दुःख ही दुख जहाँ सुक्ख का लेश ना।।
पूरिये नाथ! मेरी मनोकामना।
हो सदा स्वात्मतत्वैक की भावना।।7।।

मैं मनुष योनि में सौख्य को चाहता।
किंतु सब ओर से क्लेश ही पावता।।
पूरिये नाथ! मेरी मनोकामना।
हो सदा स्वात्मतत्वैक की भावना।।8।।

देवयोनी मिली फिर भी शांती नहीं।
मानसिक और मृत्यू की पीड़ा सही।।
पूरिये नाथ! मेरी मनोकामना।
हो सदा स्वात्मतत्वैक की भावना।।9।।

रत्न सम्यक् बिना मैं भिखारी रहा।
सौख्य की चाह से दुःख पाता रहा।।
पूरिये नाथ! मेरी मनोकामना।
हो सदा स्वात्मतत्वैक की भावना।।10।।

नाथ! तुम भक्ति से आज सम्यक् मिला।
कर कृपा दीजिए ज्ञान सूरज खिला।।
पूरिये नाथ! मेरी मनोकामना।
हो सदा स्वात्मतत्वैक की भावना।।11।।

मुक्ति जब तक न हो नाथ! मांगूँ यही।
आपके पाद की भक्ति छूटे नहीं।।
पूरिये नाथ! मेरी मनोकामना।
हो सदा स्वात्मतत्वैक की भावना।।12।।

बोधि का लाभ हो 'ज्ञानमति' पूर्ण हो।
सर्व संपति मिले सौख्य परिपूर्ण हो।।
पूरिये नाथ! मेरी मनोकामना।
हो सदा स्वात्मतत्वैक की भावना।।13।।

– घत्ता –

जय जय केवल रवि, अतिशय गुणछवि, तुम धुनि किरण प्रकाश करें।
प्रभु समवसरण में, जो तुम प्रणमें, निज सुख कर में शीघ्र धरें।।14।।

ॐ ह्रीं घातिक्षयजातिशय जिनगुणसंपद्भ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

– गीता छंद –

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, जिनगुण सुसंपतिव्रत करें।
व्रत पूर्ण कर प्रद्योत हेतू, यज्ञ उत्सव विधि करें।।
वे विश्व में संपूर्ण सुखकर, इंद्र चक्रीपद धरें।
फिर 'ज्ञानमति' से पूर्ण गुणमय, तूर्ण शिव लक्ष्मी वरें।।1।।

अथ षष्ठ वलय पूजा

अथ स्थापना

– गीताछंद –

अतिशय अतुल चौदह सुदेवों, कृत जिनागम ख्यात हैं।
उन पूजते अतिशय अनूपम, पद मिले निर्बाध हैं।।
तीर्थंकरों के श्रेष्ठ गुण की, जो करें नित अर्चना।
वे कर्म शत्रू नाशकर, फिर से धरेंगे जन्म ना।।1।।

ॐ ह्रीं देवोपनीतातिशय जिनगुण समूह! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।
ॐ ह्रीं देवोपनीतातिशय जिनगुण समूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।
ॐ ह्रीं देवोपनीतातिशय जिनगुण समूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं।

– अथाष्टकं (पंचचामर छंद) –

भगीरथी[1] पवित्र नीर स्वर्ण भृंग में भरूँ।
पदारविंद[2] नाथ के त्रिधार भक्ति से करूँ।।
सुरोपनीत चौदहों महातिशायि गुण जजूँ।
न गर्भवास दुःख में पुनः कदापि मैं पचूँ।।1।।

ॐ ह्रीं देवोपनीतातिशयजिनगुणसंपद्भ्यः जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

सुगंध गंध चंदनादि स्वर्ण पात्र में भरूँ।
समस्त दुःख शांति हेतु चर्ण चर्चन करूँ।।
सुरोपनीत चौदहों महातिशायि गुण जजूँ।
न गर्भवास दुःख में पुनः कदापि मैं पचूँ।।2।।

ॐ ह्रीं देवोपनीतातिशयजिनगुणसंपद्भ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

अखंड धौत श्वेत शालि[3] स्वर्ण थाल में भरें।
अखंड सौख्य पुंज हेतु, पुंज को यहाँ धरें।।

1. भागीरथी नदी। 2. चरण कमल। 3. चावल।

सुरोपनीत चौदहों महातिशायि गुण जजूँ।
न गर्भवास दुःख में पुनः कदापि मैं पचूँ।।3।।

ॐ ह्रीं देवोपनीतातिशयजिनगुणसंपद्भ्यः अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

गुलाब केवड़ा जुही सुगंधि पुष्प को लिये।
रतीपतीजयी जिनेंद्र पाद में चढ़ा दिये।।
सुरोपनीत चौदहों महातिशायि गुण जजूँ।
न गर्भवास दुःख में पुनः कदापि मैं पचूँ।।4।।

ॐ ह्रीं देवोपनीतातिशयजिनगुणसंपद्भ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

रसादियुक्त मिष्ट[1] मोदकादि थाल में भरें।
निजात्म[2] सौख्यस्वाद हेतु आप अर्चना करें।।
सुरोपनीत चौदहों महातिशायि गुण जजूँ।
न गर्भवास दुःख में पुनः कदापि मैं पचूँ।।5।।

ॐ ह्रीं देवोपनीतातिशयजिनगुणसंपद्भ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कपूर ज्योति अंधकार नाश में प्रधान है।
सुआरती उतारते उदोत[3] ज्ञान भानु है।।
सुरोपनीत चौदहों महातिशायि गुण जजूँ।
न गर्भवास दुःख में पुनः कदापि मैं पचूँ।।6।।

ॐ ह्रीं देवोपनीतातिशयजिनगुणसंपद्भ्यः मोहांधकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

दशांग धूप ले सुगंध अग्निपात्र में जरे।
समस्त पाप शत्रु आप पूजते तुरत टरें।।
सुरोपनीत चौदहों महातिशायि गुण जजूँ।
न गर्भवास दुःख में पुनः कदापि मैं पचूँ।।7।।

ॐ ह्रीं देवोपनीतातिशयजिनगुणसंपद्भ्यः अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

1. मीठे। 2. अपनी आत्मा के सुख का अनुभव। 3. प्रगटे।

अनार संतरा बदाम द्राक्ष[1] थाल में भरे।
जिनेंद्र को चढ़ावते, निजात्म संपदा भरें।।
सुरोपनीत चौदहों महातिशायि गुण जजूँ।
न गर्भवास दुःख में पुनः कदापि मैं पचूँ।।8।।

ॐ ह्रीं देवोपनीतातिशयजिनगुणसंपद्भ्यः मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जलादि अष्ट द्रव्य में मिलाय रत्न अर्घ्य ले।
चढ़ाय आपके समीप, तीन रत्न[2] लूँ भले।।
सुरोपनीत चौदहों महातिशायि गुण जजूँ।
न गर्भवास दुःख में पुनः कदापि मैं पचूँ।।9।।

ॐ ह्रीं देवोपनीतातिशयजिनगुणसंपद्भ्यः अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– दोहा –

सकल जगत में शांतिकर, शांतिधार सुखकार।
जिनपद में धारा करूँ, सकल संघ हितकार।।

शांतये शांतिधारा।

सुरतरु के सुरभित सुमन, सुमनस चित्त हरंत।
पुष्पांजलि अर्पण करत, मिटता दुःख तुरंत।।

दिव्य पुष्पांजलिः।

अथ प्रत्येक अर्घ्य

– नरेन्द्र छंद –

जिन अतिशय सर्वार्ध मागधी, भाषामय सुखकारी।
सुनने वाले भव्य जनों के, भव भव दुःख परिहारी।।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, जिनगुण गण मणि ध्याऊँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके निजकी, रत्नत्रय निधि पाऊँ।।1।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा सर्वार्धमागधीयभाषा देवोपनीतातिशय जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

1. दाख-किसमिस। 2. रत्नत्रय।

जात विरोधी सभी जीवगण, वैर भाव सब तजते।
मैत्रीभाव धरें आपस में, बड़े प्रेम से रहते।।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, जिनगुण गण मणि ध्याऊँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके निजकी, रत्नत्रय निधि पाऊँ।।2।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा सर्वजनमैत्रीभाव देवोपनीतातिशय-जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब ऋतु के फल फूल फलित हों, एक साथ मन मोहें।
संख्यातों योजन तक ऐसा, अतिशय अद्‌भुत होवे।।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, जिनगुण गण मणि ध्याऊँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके निजकी, रत्नत्रय निधि पाऊँ।।3।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा सर्वर्तुफलादिशोभित तरुपरिणामदेवोपनीतातिशयजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दर्पण तल सम रत्नमयी हो, पृथ्वी अतिशयकारी।
प्रभु के विहरण हेतु देवगण, रचना करते सारी।।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, जिनगुण गण मणि ध्याऊँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके निजकी, रत्नत्रय निधि पाऊँ।।4।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा आदर्शतलप्रतिमारत्नमयी महीदेवोपनीतातिशय-जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वायुकुमार देव विक्रिय बल, शीतल पवन चलाते।
प्रभु विहार अनुकूल वायु से,जन-जन मन सुख पाते।।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, जिनगुण गण मणि ध्याऊँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके निजकी, रत्नत्रय निधि पाऊँ।।5।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा विहरणमनुगतवायुत्व देवोपनीतातिशय-जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सब जन परमानंद प्राप्त कर, प्रभु के गुण गाते हैं।
रोग शोक भय संकट दुख को, तुरत भूल जाते हैं।।

अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, जिनगुण गण मणि ध्याऊँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके निजकी, रत्नत्रय निधि पाऊँ।।6।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा सर्वजनपरमानंदत्व देवोपनीतातिशय-जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कंटक धूली आदि दूर कर, वायु सुखद बहती है।
प्रभु विहार के समय दूर तक, भूमि स्वच्छ रहती है।।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, जिनगुण गण मणि ध्याऊँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके निजकी, रत्नत्रय निधि पाऊँ।।7।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा वायुकुमारोपशमित धूलिकंटकादि देवोपनीतातिशयजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मेघकुमार करें नित रुचि से, गंधोदक की वृष्टी।
सौधर्मेंद्र करें नित आज्ञा, प्रभुपद में अति भक्ती।।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, जिनगुण गण मणि ध्याऊँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके निजकी, रत्नत्रय निधि पाऊँ।।8।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा मेघकुमारकृत गंधोदकवृष्टि देवोपनीतातिशय-जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्रीविहार[1] के समय प्रभू के, चरण कमल के तल में।
स्वर्णकमल सौगंधित सुरगण, रचें उसी ही क्षण में।।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, जिनगुण गण मणि ध्याऊँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके निजकी, रत्नत्रय निधि पाऊँ।।9।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा पादन्यासे कृतपद्मरचना देवोपनीतातिशय-जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शाली आदिक खेती बहुविध, फल के भार झुकी हैं।
देवोंकृत यह अतिशय सुन्दर, सब जन पूर्ण सुखी हैं।।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, जिनगुण गण मणि ध्याऊँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके निजकी, रत्नत्रय निधि पाऊँ।।10।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा फलभारनम्रशालि देवोपनीतातिशय-जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

---

1. भगवान् का विहार।

शरद्ऋतू के स्वच्छ गगनसम, निर्मल अभ्र[1] सुहाता।
उल्कापात धूम आदी से, रहित प्रभू यश गाता।।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, जिनगुण गण मणि ध्याऊँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके निजकी, रत्नत्रय निधि पाऊँ।।11।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा शरत्कालवन्निर्मलगगनत्व देवोपनीतातिशय-जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सभी दिशायें निर्मल होतीं, शरद्[2] मेघ सम दिखतीं।
रोगादिक पीड़ाएँ जन को, वहाँ नहीं हो सकतीं।।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, जिनगुण गण मणि ध्याऊँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके निजकी, रत्नत्रय निधि पाऊँ।।12।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा शरन्मेघवन्निर्मलदिग्भागत्व देवोपनीतातिशय-जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चतुर्निकाय देवगण सत्वर, [3]आवो आवो आवो।
इंद्राज्ञा से देव बुलाते, आवो प्रभु गुण गावो।।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, जिनगुण गण मणि ध्याऊँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके निजकी, रत्नत्रय निधि पाऊँ।।13।।

ॐ ह्रां ह्रींह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा एतैतेति चतुर्निकायामरपरापराह्वान देवोपनीतातिशय-जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

यक्षेंद्रों के मस्तक ऊपर, धर्मचक्र चमके हैं।
चार दिशा में दिव्य चक्र ये, किरणों से दमके हैं।।
अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, जिनगुण गण मणि ध्याऊँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके निजकी, रत्नत्रय निधि पाऊँ।।14।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा धर्मचक्रचतुष्टय देवोपनीतातिशय-जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

– पूर्णार्घ्य –

देवों कृत ये चौदह अतिशय, पुण्य रत्न आकर[4] हैं।
इन गुण का स्मरण मात्र भी, जिनगुण रत्नाकर[5] है।।

1. आकाश। 2. असोज कार्तिक के मेघ। 3. शीघ्र। 4. खान। 5. समुद्र।

अर्घ्य चढ़ाऊँ भक्ति भाव से, जिनगुण गण मणि ध्याऊँ।
अतिशय पुण्य बढ़ाके निजकी, रत्नत्रय निधि पाऊँ।।15।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः देवोपनीतातिशय जिनगुणसंपद्भ्यः पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

जयमाला

– सोरठा –

तीन लोक के भव्य, तुम पद पंकज सेवते।
महापुण्य फलराशि, गाऊँ तुम जयमालिका।।1।।

– शंभु छंद –

जय जय त्रिभुवन के चूड़ामणि, जय जय तीर्थंकर गुण भर्ता।
जय चिंतित दाता चिंतामणि, जय कल्पवृक्ष वांछित फलदा।।
जय समवसरण में कमलासन पर, चतुरंगुल से अधर रहें।
वैभव अनंत को पाकर भी, प्रभु उससे नित्य अलिप्त रहें।।2।।

तुमने सोलह कारण भाके, तीर्थंकर वैभव पाया है।
प्रभु पंचकल्याणक के स्वामी, इंद्रों ने तुम गुण गाया है।।
चौतीसों अतिशय सहित आप, वसु प्रातिहार्य के स्वामी हैं।
आनन्त्य चतुष्टय से शोभित, सब जग के अंतर्यामी हैं।।3।।

प्रभु समवसरण में जन असंख्य, जिनदेव वंदना करते हैं।
नर तिर्यक् सुरगण भी असंख्य, बारह कोठों में बसते हैं।।
यद्यपि वह क्षेत्र बहुत छोटा, फिर भी अवकाश सभी को है।
जिनवर माहात्म्य से यह अतिशय, सब आपस में अस्पृष्ट[1] रहें।।4।।

इन कोठों में मिथ्या दृष्टी, संदिग्ध विपर्यय नहिं होते।
नहिं होंय असंज्ञी औ अभव्य, पाखंडी द्रोही नहिं होते।।
नहिं वहाँ कभी आतंक रोग, क्षुध तृष्णा कामादिक बाधा।
नहिं जन्म मरण नहिं वैर कलह, नहिं शोक वियोग जनितबाधा।।5।।

1. बिना स्पर्श किये।

सब सीढ़ी एक हाथ ऊँची, जो बीस हजार प्रमाण कहीं।
बालक औ वृद्ध पंगु आदिक, अंतर्मुहूर्त[1] में चढ़ें सही।।
अभिमानी मानस्तंभ देख, सब मान कषाय नशाते हैं।
जिन दर्शन कर सम्यक्त्व निधी, पाकर निहाल हो जाते हैं।।6।।

प्रभु की कल्याणी वाणी सुन, निज भव त्रैकालिक जान रहे।
अतिशय अनंतगुणश्रेणीमय, परिणाम विशुद्धी ठान रहे।।
सब असंख्यात गुग श्रेणि रूप, कर्मों का खंडन करते हैं।
क्रम से वे बोधि समाधी पा, मुक्ती कन्या को वरते हैं।।7।।

निज गुण संपत्ती में प्रधान, त्रेसठ गुण मणि को लभते हैं।
जिन आत्म सुधारस पीकर के, शाश्वत परमानंद चखते हैं।।
इस विध प्रभु तुम कीर्ती सुनकर, मैं चरण शरण में आया हूँ।
अब जो कर्तव्य आपका हो, वह कीजे मैं अकुलाया हूँ।।8।।

प्रभु मेरी यही प्रार्थना है, मेरा सम्यक्त्व नहीं छूटे।
जब तक नहिं मुक्ति मिले मुझको, नहिं तुमसे मम नाता टूटे।।
संयम का पूर्ण लाभ होवे, मरणांत[2] समाधी हो मेरी।
भव भव 'सुज्ञानमती' होवे, जब तक न मिटे भव की फेरी।।1।।

– घत्ता –

जय जय जिन अतिशय, अनुपम निधिमय जय जय त्रेसठ गुण पूरे।
जो पूजें ध्यावें, भक्ति बढ़ावें, जिनगुणसंपत्ति निज पूरे।।10।।

ॐ ह्रीं देवोपनीतातिशय जिनगुणसंपद्भ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
शांतये शांतिधारा। दिव्य पुष्पांजलिः।

– गीता छंद –

जो भव्य श्रद्धा भक्ति से, जिनगुण सुसंपति व्रत करें।
व्रत पूर्ण कर प्रद्योत हेतू, यज्ञ उत्सव विधि करें।।
वे विश्व में संपूर्ण सुखकर, इंद्रचक्री पद धरें।
फिर 'ज्ञानमति' से पूर्ण गुणमय, तूर्ण शिवलक्ष्मी वरें।।

।। इत्याशीर्वादः ।।

1. अड़तालीस मिनट के भीतर ही। 2. मरण के काल में।

जिनगुणसंपत्ति आरती

ॐ जय जिनराज प्रभो! स्वामी जय जिनराज प्रभो।
धर्मतीर्थ के कर्ता, जय तीर्थेश विभो।। ॐ जय.....।।1।।

सोलह कारण भाके, प्रभु तीर्थेश हुये। स्वामी...।
पंचकल्याणक पाके, सुरपति वंद्य हुये।। ॐ जय.....।।2।।

चौंतिस अतिशयमंडित, अनवधि गुण भर्ता। स्वामी..।
प्रातिहार्य गुण भूषित, त्रिभुवन हित कर्ता।। ॐ जय.....।।3।।

श्री जिनवर गुण संपत्, त्रेसठ विध गाये। स्वामी...।
जो जिनवर गुण वंदे, निज संपति पाये।। ॐ जय.....।।4।।

परम अनंत चतुष्टय, अभ्यंतर लक्ष्मी। स्वामी.....।
सम्यग्ज्ञानमती से, पाऊँ शिव लक्ष्मी।। ॐ जय.....।।5।।

प्रशस्तिः

सिद्धारथ नृप के तनुज, महावीर भगवान।
नमूँ नमूँ उनको सतत, जिनका तीर्थ प्रधान।।1।।

मूल संघ के अग्रणी, कुंदकुंद आचार्य।
गच्छ सरस्वति नाम औ, बलात्कार गण धार्य।।2।।

परंपरा में उन्हीं के, शांतिसागराचार्य।
उनके पट्टाधीश थे, वीरसागराचार्य।।3।।

श्रमणी दीक्षा के गुरू, श्रमण मान्य जग वंद्य।
जिनके पाद प्रसाद से, ज्ञानमती हुई धन्य।।4।।

जिन भक्ती से प्रेरिता, पूजा रची महान।
नाम इंद्रध्वज विश्व में, ख्यात अपूरब जान।।5।।

वीर अब्द पच्चीस सौ, तीन मास वैशाख।
तिथी पूर्णिमा शुभ दिवस, मंगलमय सित पाख।।6।।

हस्तिनागपुर क्षेत्र में, श्रद्धा भक्ति समेत।
जिनगुण की पूजा पुनः, रची स्वात्मगुण हेत।।7।।

श्री जिनगुण संपति महा, उद्यापन सुविधान।
ज्ञानमती मैं आर्यिका, पूरण की रुचि ठान।।8।।

जो जन जिन गुणसंपदा, व्रत करते रुचिधार।
उद्यापन कर अंत में, पूर्ण लहें व्रतसार।।9।।

यावत् जिनगुण विश्व में, उदित रहें सुखकार।
तावत् यह पूजा विधी, जयो जगत् हितकार।।10।।

जिनगुणसंपति व्रत विधि एवं कथा

धातकी द्वीप के अन्तर्गत पूर्वमेरु संबंधी पश्चिम विदेह क्षेत्र में गंधिल नामक देश है। उसमें एक पाटलिपुत्र नाम का नगर है। उस नगर में एक नागदत्त सेठ रहते थे, उनकी भार्या का नाम सुमति था। वे दंपत्ति धनहीन होने से अत्यंत दुःखी थे। दोनों ही जंगल से लकड़ी आदि लाकर उसे बेचकर अपना पेट पालन करते थे। एक दिन बेचारी सुमति भूख-प्यास से घबराकर एक वृक्ष की छाया में बैठी थी, इतने में बहुत से नर-नारियों को उत्साह के साथ जाते हुए देखकर पूछा–बंधु और बहनों! आप लोग आज कहाँ जा रहे हैं? तब किसी ने कहा–बहन! इस अंबरतिलक पर्वत पर पिहितास्रव नाम के महामुनि आये हुए हैं, उनके दर्शनपूजन के लिए हम लोग जा रहे हैं।

सुमति[1] भी उन लोगों के साथ गुरु के दर्शनार्थ वहाँ चली गई। मुनिराज से षट्कर्म और बाहर व्रतों का उपदेश सुनकर अवसर पाकर उसने प्रश्न किया–हे भगवन्! किस पाप के उदय से मैं महान् दरिद्र हुई हूँ? मुनिराज ने कहा–पुत्री! पलासकूट ग्राम में दिविलह राजा की सुमति रानी से तू धनश्री नाम की कन्या हुई थी। एक दिन सखियों के साथ वन में क्रीड़ा करते हुए वृक्ष के नीचे ध्यान में मग्न समाधिगुप्त मुनिराज को देखा, रूप-यौवन के गर्व से उन्मत्त होकर तूने उनके ऊपर कुत्ते के द्वारा उपसर्ग कर दिया किन्तु मुनिराज ने शांत भाव से उपसर्ग सहन कर लिया। मुनि-उपसर्ग के पाप के कारण आयु पूर्णकर मरकर तू सिंहनी हुई। वहाँ से आकर तू धनहीन घर में उत्पन्न हुई है।

पुनः सुमति बोली–हे भगवन्! कोई ऐसा व्रत बतलाइये कि जिससे इस पाप से छुटकारा मिले। मुनि ने कहा–पुत्री! तुम सम्यग्दर्शनपूर्वक जिनगुणसम्पत्ति व्रत करो, जिससे तुम्हारे मनवांछित कार्यों की सिद्धि होगी। इस व्रत की विधि इस प्रकार है–सोलह कारण भावनाओं के

1. आदिपुराण में–वणिक् की पुत्री निर्नामिका ने यह व्रत पिहितास्रव मुनि से लेकर किया और पुनः क्रम से प्रभा देवी आदि पदों को प्राप्त करते हुए राजा श्रेयांस हो गया, ऐसा कथन है।

16 उपवास, पंचकल्याणक के 5, अष्ट प्रातिहार्य के 8 और चौंतीस अतिशयों के 34, इस प्रकार कुल मिलाकर 63 उपवास या प्रोषध (एक भुक्ति) करें।

[1]व्रतविधि निर्णय में ''प्रतिपदा के 16, पंचमी के 5, अष्टमी के 8, दशमी के 20 और चौदस के 14 ऐसे तिथि से उपवास माने हैं।'' व्रत के दिन पंचामृत अभिषेक करके पूजन करें, पुनः जाप्य करें। व्रत की कथा पढ़ें, स्वाध्याय आदि करते हुए दिन भर धर्मध्यान में व्यतीत करें। व्रत के दिन जिनगुणसम्पत्ति मंत्रों में से जिस मंत्र का दिन हो, उस मंत्र का जाप्य करें।

व्रत पूर्ण होने पर उद्यापन करें। उद्यापन की शक्ति न होने से व्रत दूना करें। उद्यापन में मंदिर में मंडल माँडकर बड़े समारोह के साथ भगवान् की सम्मानपूर्वक पूजा करें, पात्रदान देवें, आम, केले, नारंगी, श्रीफल, अखरोट, खारिक, बादाम इत्यादि त्रेसठ-त्रेसठ फल अनेक प्रकार के नैवेद्य सहित भगवान् की पूजा करें। मंदिर में चंदोवा, छत्र, चंवर, झालर, घंटा आदि उपकरण भेंटकरें। ज्ञानावरणी कर्मक्षयार्थ श्रावक-श्राविकाओं को 63 ग्रंथ बाँटें।

सुमति (निर्नामिका) ने गुरु से व्रत ग्रहण कर विधिवत् पालन किया, अंत में समाधिपूर्वक मरण करके स्वर्ग में ललितांग देव की स्वयंप्रभा नाम की महादेवी हुई। वहाँ से चलकर जंबूद्वीप के पूर्वविदेह संबंधी पुष्कलावती देश के अन्तर्गत पुंडरीकिणी नगरी में वज्रदंत चक्रवर्ती की लक्ष्मीमती नाम की महारानी से श्रीमती नाम की पुत्री हुई, जो कि वज्रजंघ महाराज को विवाही गई। किसी समय इन दम्पत्ति ने मुनियुगल को आहार दान देकर महान् पुण्य संचय किया। वहाँ से मरकर उत्तम भोगभूमि में दोनों पति-पत्नी हुए। वहाँ पर चारण मुनियों के उपदेश से दोनों ने सम्यक्त्व ग्रहण कर लिया। वहाँ से मरकर ऐशान स्वर्ग में वज्रजंघ आर्य श्रीधर देव हो गये और श्रीमती आर्या स्वयंप्रभ देव हो गईं। सम्यक्त्व के प्रभाव से श्रीमती को स्त्रीपर्याय से छुटकारा मिल गया। स्वर्ग से च्युत होकर विदेह क्षेत्र में श्रीधर देव तो राजा सुविधि हुआ और उसकी मनोरमा रानी से यह स्वयंप्रभ देव का जीव केशव नाम का प्यारा पुत्र हुआ। पुनः दीक्षित होकर ये सुविधि सोलहवें स्वर्ग में इन्द्र हुए एवं केशव वहीं पर प्रतीन्द्र हुआ। पुनः यह इन्द्र

1. व्रत तिथि निर्णय, पृ. 264

स्वर्ग से आकर पूर्वविदेह में वज्रनाभि चक्रवर्ती हुआ और प्रतीन्द्र का जीव चक्रवर्ती व चौदह रत्नों में से गृहपति नाम का रत्न हुआ, जिसका नाम धनदेव था। अनन्तर वज्रनाभि चक्रीश ने दीक्षा लेकर सोलहकारण भावनाओं से तीर्थंकर प्रकृति को बाँध लिया और श्रेणी में मरणकर सर्वार्थसिद्धि में अहमिन्द्र हो गये। धनदेव भी दीक्षित होकर अंत में मरणकर ध्यान के प्रभाव से सर्वार्थसिद्धि में अहमिंद्र हो गये। वहाँ से चलकर वज्रनाभि का जीव अहमिंद्र तो भगवान् ऋषभदेव हुआ है और धनदेव का जीव कुरुजांगल देश के हस्तिनापुर में राजा सोमप्रभ का भाई श्रेयांस कुमार हुआ है।

भगवान् ऋषभदेव को जब एक वर्ष तक आहार का लाभ नहीं हुआ, तब हस्तिनापुर में आने पर उनके दर्शन से राजा श्रेयांस को श्रीमती के भव में दिये आहारदान का जातिस्मरण हो जाने से आहारदान की विधि का ज्ञान हो गया। उसी समय उन्होंने भगवान को इक्षुरस का आहार देकर अक्षय पुण्य सम्पादन किया, आज भी वह दिवस अक्षयतृतीया के नाम से जगत् में पूज्य हो रहा है।

राजा श्रेयांस भगवान के केवलज्ञान के अनन्तर उनके समवसरण में अपने भाई के साथ दीक्षित होकर भगवान के गणधर हो गये। पुनः अन्त में कर्मों का नाश कर मुक्ति पद को प्राप्त हो गये। अहो! निर्नामिका ने एक जिनगुण सम्पत्ति व्रत का पालन किया, जिसके प्रसाद से उत्तम सुखों को भोगकर अन्त में राजा श्रेयांस होकर निर्वाणपद को प्राप्त कर वहाँ पर अनन्त-अनन्त काल के लिए पूर्ण सुखी हो चुके हैं।

अथ जिनगुणसंपत्ति के मंत्र

प्रत्येक मंत्र के पहले 'ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असि आ उसा' इतने बीजाक्षर बोलना चाहिए।

प्रतिपदा की 16 जाप्य

1. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा दर्शनविशुद्धिभावनायै जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

2. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा विनयसंपन्नताभावनायै जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

3. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा शीलव्रतेष्वनतिचारभावनायै जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

4. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा अभीक्ष्णज्ञानोपयोगभावनायै जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

5. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा संवेगभावनायै जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

6. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा शक्तितस्त्यागभावनायै जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

7. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा शक्तितस्तपोभावनायै जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

8. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा साधुसमाधिभावनायै जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

9. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा वैयावृत्यकरणभावनायै जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

10. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा अर्हद्भक्तिभावनायै जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

11. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा आचार्यभक्तिभावनायै जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

12. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा बहुश्रुतभक्तिभावनायै जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

13. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा प्रवचनभक्तिभावनायै जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

14. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा आवश्यकापरिहाणिभावनायै जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

15. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा मार्गप्रभावनाभावनायै जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

16. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा प्रवचनवत्सलत्वभावनायै जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

पंचमी की 5 जाप्य

1. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा स्वर्गावतरणगर्भकल्याणकजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

2. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा जन्माभिषेककल्याणकजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

3. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा परिनिष्क्रमणकल्याणकजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

4. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा केवलज्ञानकल्याणकजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

5. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा निर्वाणकल्याणकजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

अष्टमी के 8 जाप्य

1. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा अशोकवृक्षमहाप्रातिहार्यजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

2. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा सुरपुष्पवृष्टिमहाप्रातिहार्यजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

3. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा दिव्यध्वनिमहाप्रातिहार्यजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपाये नमः।

4. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा चतुष्षष्टिचामरमहाप्रातिहार्य-जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

5. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा सिंहासनमहाप्रातिहार्यजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

6. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा भामंडलमहाप्रातिहार्यजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

7. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा देवदुन्दुभिमहाप्रातिहार्यजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

8. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा छत्रत्रयमहाप्रातिहार्यजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

दशमी की 20 जाप्य

1. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा निःस्वेदत्वसहजातिशयजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

2. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा निर्मलत्वसहजातिशयजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

3. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा क्षीरगौररुधिरत्वसहजातिशय-जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

4. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा समचतुरस्रसंस्थानसहजातिशय-जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

5. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा वज्रवृषभनाराचसंहननसहजातिशय-जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

6. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा सौरूप्यसहजातिशयजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

7. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा सौगंध्यसहजातिशयजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायैनमः।

8. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा सौलक्षण्यसहजातिशयजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

9. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा अप्रमितवीर्यसहजातिशयजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

10. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा प्रियहितवादित्वसहजातिशय-जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

11. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा गव्यूतिशतचतुष्टयसुभिक्षत्वघातिक्षय जातिशयजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

12. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा गगनगमनत्वघातिक्षयजातिशय-जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

13. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा अप्राणिवधत्वघातिक्षयजातिशय-जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

14. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा भुक्त्यभावघातिक्षयजातिशय-जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

15. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा उपसर्गाभावघातिक्षयजातिशय-जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

16. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा चतुर्मुखत्वघातिक्षयजातिशय-जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

17. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा सर्वविद्येश्वरघातिक्षयजातिशय-जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

18. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा अच्छायत्वघातिक्षयजातिशय-जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

19. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा अपक्ष्मस्पंदत्वघातिक्षयजातिशय-जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

20. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा समाननखकेशत्वघातिक्षयजातिशय-जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

चतुर्दशी की 14 जाप्य

1. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा सर्वार्धमागधीयभाषादेवोपनीतातिशय-जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

2. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा सर्वजनमैत्रीभावदेवोपनीतातिशय-जिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

3. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा सर्वर्तुफलादिशोभिततरुपरिणामदेवो-पनीतातिशयजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

4. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा आदर्शतलप्रतिमारत्नमयीमहीदेवो-पनीतातिशयजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

5. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा विहरणमनुगतवायुत्वदेवो-पनीतातिशयजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

6. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा सर्वजनपरमानन्दत्वदेवो-पनीतातिशयजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

7. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा वायुकुमारोपशमितधूलिकंटकादिदेवोपनीतातिशयजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

8. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा मेघकुमारकृतगन्धोदकवृष्टिदेवोपनीतातिशयजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

9. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा पादन्यासे कृतपद्मा निदेवोपनीतातिशयजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

10. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा फलभारनम्रशालिदेवोपनीतातिशयजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

11. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा शरत्कालवन्निर्मलगगनत्वदेवोपनीतातिशयजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

12. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा शरन्मेघवन्निर्मलदिग्भावत्वदेवोपनीतातिशयजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

13. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा एतैतेतिचतुर्निकायामरपरापराह्वानदेवोपनीतातिशयजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

14. ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः असिआउसा धर्मचक्रचतुष्टयदेवोपनीतातिशयजिनगुणसंपदे मुक्तिपदकारणस्वरूपायै नमः।

गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती माताजी की पूजन

रचयित्री–**आर्यिका चन्दनामती**

–स्थापना–

पूजन करो जी-

श्री गणिनी ज्ञानमती माताजी की, पूजन करो जी।
जिनकी पूजन करने से, अज्ञान तिमिर नश जाता है।
जिनकी दिव्य देशना से, शुभ ज्ञान हृदय बस जाता है।।
उनके श्री चरणों में, आह्वानन स्थापन करते हैं।
सन्निधिकरण विधीपूर्वक, पुष्पांजलि अर्पित करते हैं।।
पुष्पांजलि अर्पित करते हैं . . . .

पूजन करो जी,

श्री गणिनी ज्ञानमती माताजी की पूजन करो जी।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मातः ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मातः ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनं।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मातः! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

–अष्टक–

ज्ञानमती जी नाम तुम्हारा, ज्ञान सरित अवगाहन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।
मुझ अज्ञानी ने माँ जबसे, तेरी छाया पाई है।
तब से दुनिया की कोई छवि, मुझको लुभा न पाई है।।
ज्ञानामृत जल पीने हेतू, तव पद में मेरा मन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।1।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन और सुगंधित गंधों, की वसुधा पर कमी नहीं।
लेकिन तेरी ज्ञान सुगन्धी, से सुरभित है आज मही।।

उसी ज्ञान की सौरभ लेने, को आतुर मेरा मन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।2।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे संसारतापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

जग के नश्वर वैभव से, मैंने शाश्वत सुख था चाहा।
पर तेरे उपदेशों से, वैराग्य हृदय मेरे भाया।।
अक्षय सुख के लिए मुझे, तेरा प्रवचन ही साधन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।3।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

कामदेव ने निज बाणों से, जब युग को था ग्रसित किया।
तुमने अपनी कोमल काया, लघुवय में ही तपा दिया।।
इसीलिए तव पद में आकर, शान्त हुआ मेरा मन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।4।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे कामवाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

मानव सुन्दर पकवानों से, अपनी क्षुधा मिटाते हैं।
लेकिन उनके द्वारा भी नहिं, भूख मिटा वे पाते हैं।।
आत्मा की संतृप्ति हेतु, तव वाणी मेरा भोजन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।5।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विद्युत के दीपों से जग ने, गृह अंधेर मिटाया है।
ज्ञान का दीपक लेकर तुमने, अन्तरंग चमकाया है।।
घृत का दीपक लेकर माता, हम करते तव प्रणमन हैं।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।6।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे मोहान्धकारविनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मों ने ही अब तक मुझको, यह भव भ्रमण कराया है।
तुमने उन कर्मों से लड़कर, त्याग मार्ग अपनाया है।।
धूप जलाकर तेरे सम्मुख, हम करते तव पूजन हैं।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।7।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

कितने खट्टे मीठे फल को, मैंने अब तक खाया है।
तुमने माँ जिनवाणी का, अनमोल ज्ञानफल खाया है।।
तव पूजनफल ज्ञाननिधी, मिल जावे यह मेरा मन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।8।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

पिच्छि कमण्डलुधारी माता, नमन तुम्हें हम करते हैं।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, अर्घ्य समर्पण करते हैं।।
युग की पहली ज्ञानमती के, चरणों में अभिवन्दन है।
तेरी पावन प्रतिभा लखकर, मेरा मन भी पावन है।।9।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

–शेरछंद–

हे माँ तू ज्ञान गंग की पवित्र धार है।
तेरे समक्ष गंगा की लहरें बेकार हैं।।
उस धार की कुछ बूँदों से जलधार मैं करूँ।
वह ज्ञान नीर मैं हृदय के पात्र में भरूँ।।

शांतये शांतिधारा . . .।।

स्याद्वाद अनेकान्त के उद्यान में माता।
बहुविध के पुष्प खिले तेरे ज्ञान में माता।।
कतिपय उन्हीं पुष्पों से मैं पुष्पांजलि करूँ।
उस ज्ञानवाटिका में ज्ञान की कली बनूँ।।

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपेत् . . .।।

जयमाला

– दोहा –

ज्ञानमती को नित नमूँ, ज्ञान कली खिल जाय।
ज्ञानज्योति की चमक में, जीवन मम मिल जाय।।

धुन –नागिन-मेरा मन डोले . . .।

हे बालसती, माँ ज्ञानमती, हम आए तेरे द्वार पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।
शरद पूर्णिमा दिन था सुन्दर, तुम धरती पर आईं।
सन् उन्निस सौ चौंतिस में माँ, मोहिनि जी हर्षाईं।। माता...।।
थे पिता धन्य, नगरी भी धन्य, मैना के इस अवतार पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।1।।
बाल्यकाल से ही मैना के, मन वैराग्य समाया।
तोड़ जगत के बंधन सारे,छोड़ी ममता माया।। माता....।।
गुरु संग मिला, अवलम्ब मिला, पग बढ़े मुक्ति के द्वार पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।2।।
शान्तिसिन्धु की प्रथम शिष्यता, वीरसिन्धु ने पाई।
उनकी शिष्या ज्ञानमती जी ने ,ज्ञान की ज्योति जलाई।। माता....।।
शिवरागी की, वैरागी की, ले दीप सुमन का थाल रे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।3।।
माता तुम आशीर्वाद से, जम्बूद्वीप बना है।
हस्तिनापुर की पुण्यधरा पर, कैसा अलख जगा है।। माता....।।
ज्ञान ज्योति चली, जग भ्रमण करी, तेरे ही ज्ञान आधार पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।4।।
तीर्थ अयोध्या-मांगीतुंगी, का विकास करवाया।
फिर प्रयाग में तपस्थली का, नूतन तीर्थ बनाया।। माता.....।।
प्रभु समवसरण, रथ हुआ भ्रमण, श्री ऋषभदेव के नाम का,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।5।।

कुण्डलपुर तीरथ विकास की, नई प्रेरणा आई।
महावीर की जन्मभूमि में, अगणित खुशियाँ छाईं।। माता...।।
महावीर ज्योति, रथ से उद्योत, कर दिया पुनः संसार को,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।6।।
तीर्थंकर की जन्मभूमियों, का विकास करवाया।
पार्श्वनाथ के उत्सव का फिर, तुमने बिगुल बजाया।। माता.....।।
संदेश दिया, उपदेश दिया, भावना हुई साकार है,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।7।।
यथा नाम गुण भी हैं वैसे, तुम हो ज्ञान की दाता।
तुम चरणों में आकर के हर, जनमानस हर्षाता।।माता....।।
साहित्य सृजन, श्रुत में ही रमण, कर चलीं स्वात्म विश्राम पे,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।8।।
गणिनी माता के चरणों में, यही याचना करते ।
कहे ''चन्दनामती'' ज्ञान की , सरिता मुझमें भर दे।।माता.....।।
ज्ञानदाता की, जगमाता की, वन्दना करूँ शतबार मैं,
शुभ अर्घ्य संजोकर लाए हैं।।9।।

– दोहा –

लोहे को सोना करे, पारस जग विख्यात।
तुम जग को पारस करो, स्वयं ज्ञानमती मात।।10।।

ॐ ह्रीं गणिनीप्रमुख श्री ज्ञानमती मात्रे जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
शांतये शांतिधारा, दिव्य पुष्पांजलिः।

– शंभुछंद –

जो गणिनी ज्ञानमती माता की, करें सदा पूजा रुचि से।
वे ज्ञानामृत से निज मन को, पावन कर अभिसिंचित करते।।
इस शरदपूर्णिमा के चन्दा की, ज्ञानरश्मियाँ बढ़ें सदा।
''चन्दनामती'' युग युग तक यह, आलोक जगत को मिले सदा।।

।। इत्याशीर्वादः, पुष्पांजलिः ।।

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती माताजी

तर्ज-फूलों सा चेहरा तेरा.....

इस युग की माँ शारदे, तू धर्म की प्राण है।
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।।टेक.।।
महावीर प्रभु के शासन में अब तक,
कोई भी नारी न ऐसी हुई।
साहित्य लेखन करने की शक्ति,
तुझमें न जाने कैसे हुई।।
शास्त्र पुराणों में, भक्ति विधानों में, तेरा प्रथम नाम है विश्व में-2
कलियुग की माँ भारती, पूनो का तू चांद है,
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।।
इस युग.....।।1।।
तीर्थंकरों की जन्मभूमि का,
उत्थान माता तुमने किया।
हस्तिनापुरी में जंबूद्वीप को,
साकार माता तुमने किया।।
तीर्थ अयोध्या की, कीर्ति प्रसारित की, मस्तकाभिषेक आदिनाथ का हुआ-2
तू जग की वागीश्वरी, धरती का सम्मान है,
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।।
इस युग.....।।2।।
गणिनी शिरोमणि तेरी तपस्या,
का लाभ इस वसुधा को मिला।
चारित्र चक्री गुरु के सदृश ही,
''चंदना'' इक पुष्प जग में खिला।
पुष्प महकता है, चाँद चमकता है, ज्ञानमती माता के रूप में-2
युग युग तू जीती रहे, हम सबके अरमान हैं,
ज्ञानमती नाम है, ज्ञान की तू खान है, चारित्र परिधान है।।
इस युग.....।।3।।

भजन

-प्रज्ञाश्रमणी आर्यिका चंदनामती माताजी

तर्ज –रोम-रोम से निकले.....

रोम-रोम से निकले माता नाम तुम्हारा! हाँ नाम तुम्हारा।।
ऐसा दो वरदान कि पाऊं, निश दिन दर्श तुम्हारा।।
रोम.....।।टेक.।।
ज्ञानमती माता के पद में, जग ने तुमको पाया।
एक सूर्य सम पूर्व दिशा ने, मानो तुम्हें उगाया।।
फैला दो आलोक ज्ञान का, यही तुम्हारा नारा।।
रोम.....।।1।।
श्री चारित्र चक्रवर्ती ने, जैसे मुनिपथ बतलाया।
उसी तरह क्वाँरी कन्याओं, को तुमने पथ दर्शाया।।
सदी बीसवीं लेकर आयी, ज्ञानमती जयकारा।।
रोम.....।।2।।
श्री चारित्र चन्द्रिका माँ के, चरणों में वन्दन है।
युग की पहली ज्ञानमती, माता को अभिवन्दन है।।
अवध प्रान्त की अद्भुत मणि से, आलोकित जग सारा।।
रोम.....।।3।।
सरस्वती की प्रतिमूर्ति, ब्राह्मी सम त्याग तुम्हारा।
तभी 'चन्दनामती' जगत ने, तुमको गुरु स्वीकारा।।
गणिनी ज्ञानमती माता के, चरणों नमन हमारा।।
रोम.....।।4।।